भोजपुरी साहित्य
के
संक्षिप्त रूपरेखा

डॉ॰ तैयब हुसैन 'पीड़ित'

भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रूपरेखा

डॉ॰ तैयब हुसैन पीड़ित

शब्द संसार
न्यू अजीमाबाद कॉलोनी
पो॰-महेन्द्रू, पटना-800006

BHOJPURI SAHITYA KE SANKSIPT ROOPREKHA

(Short out lines of Bhojpuri Literature)

by

Dr. Taiyab Hussain 'Peedit'

Price : Rs. 50/-

प्रकाशन वर्ष	:	2004
स्वत्वाधिकार	:	लेखक
प्रकाशक	:	शब्द संसार न्यू अनीमाबाद कॉलोनी पो०–महेन्द्रू, पटना–6
मूल्य	:	50/– (पचास रुपया मात्र)
अक्षर संयोजक	:	अनुकृति बोरिंग रोड, पटना–1
मुद्रक	:	न्यू प्रिंटलाइन प्रेस गाँधी नगर, पटना–1

लेखक का ओर से

साहित्य के इतिहास हरदम अधूरा होले । काहें कि जइसे-जइसे साहित्य के विकास होत जाले, ओकर इतिहास लिखे के जरूरत बनल रहेले । भोजपुरी में छात्रन खातिर समस्या कुछ अधिके बा ।

खुसी के बात बा कि बिहार में नालंदा खुला विश्वविद्यालय, जवन प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम खातिर भोजपुरियो के पढ़ाई शुरू करे जा रहल बा, एह पर ध्यान देलखऽ ।

ई किताब ओकरे खातिर प्रथम पत्र में लिखल गइल पाठ्यक्रम के परिणाम ह । अलग से अउरो लोग खातिर ई उपयोगी हो सके, एह से कुछ फेर-बदल का साथे एकर प्रकाशन एह रूप में कइल जा रहल बा ।

एकर आपन सीमा बा, तबो प्रबुद्ध पाठक लोग के सुझाव के स्वागत फेर-फेर होत रही ।

तत्काल अपेक्षित सहयोग खातिर लेखक संदर्भ-स्रोत के रचनाकार लोग, ना॰ खु॰ वि॰ के पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ॰ पी॰ सी॰ पाण्डेय आ बड़ भाई तुल्य जगन्नाथ जी के प्रति आपन कृतज्ञता जतावता ।

[तैयब हुसैन 'पीड़ित']

क्रम

1. भोजपुरी साहित्य के इतिहास में काल-विभाजन के आधार		7
2. भोजपुरी काव्य	: उद्‌भव आ विकास	12
3. भोजपुरी कहानी	: उद्‌भव आ विकास	19
4. भोजपुरी उपन्यास	: उद्‌भव आ विकास	24
5. भोजपुरी नाटक	: उद्‌भव आ विकास	28
6. भोजपुरी निबंध	: उद्‌भव आ विकास	36
7. भोजपुरी में पत्र-पत्रिका		41

भोजपुरी साहित्य के इतिहास में काल–विभाजन के आधार

'भोजपुरी भाषा का इतिहास' (लेखक- रासबिहारी पाण्डेय, प्रकाशक- लोकसाहित्य संगम, बिहियां, भोजपुर; प्रकाशन काल- 1986 ई॰) के प्रस्तावना लिखत प्रसिद्ध भोजपुरी अध्येयता पं॰ गणेश चौबे के कहनाम बा कि "भाषा और साहित्य का अटूट सम्बन्ध है । भाषा में प्रवाह है, गतिशीलता है, उसका रूप भी बदलता रहता है । भाषा का यह परिवर्तनशील रूप साहित्य में ही सुरक्षित रहता है । अत: किसी भाषा के अध्ययन के लिए उस भाषा के साहित्य का अनुशीलन अनिवार्य है । .....अत: किसी भी भाषा का इतिहास लिखनेवाले को उसके साहित्य से सम्यक सहायता लेनी ही पड़ती है । यही स्थिति भोजपुरी भाषा की भी है ।"

एह क्रम में श्री रासबिहारी पाण्डेय के कहनाम बा कि– "भोजपुरी एक ऐसी क्षेत्रीय भाषा है जिसका महत्व और प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय है । भोजपुरी क्षेत्र का प्राचीन इतिहास एक नहीं रहते हुए भी भोजपुरी भाषा का 'उद्‌भव और विकास' का इतिहास एक रहा है । भोजपुरी भाषा का भारतीय आर्यभाषाओं में प्रमुख स्थान है । भोजपुरी भाषा का इतिहास का काल-विभाजन, नामकरण और सामग्रियों का विभाजन निश्चित करते समय सभी भाषाविज्ञानियों के विचार को सम्मिलित निष्कर्ष निकाल कर ही इतिहास की कड़ी को आगे बढ़ाया गया है ।" (उहे : पृ॰- 4) ।

श्री पाण्डेय के मान्यता बा कि एह क्रम में पहिला प्रयास श्री दुर्गा शंकर सिंह 'नाथ' कइले बाड़न बाकी ऊ अलग इतिहास भोजपुरी के प्रस्तुत ना कर सकलन । (उहे) ।

ओने भोजपुरी साहित्य के प्रथम इतिहास लेखक डा॰ कृष्णदेव उपाध्याय के कहनाम बा कि– "भोजपुरी के काल-विभाजन का कार्य बड़ा कठिन है ।

इसका कारण यह है कि- 1. इस साहित्य के आदिकाल की कोई निश्चित रेखा नहीं खींची जा सकती । 2. इसके किसी एक काल में एकही काव्य-प्रवृत्ति परिलक्षित नहीं होती । 3. अधिकांश कवियों का न तो काल-निर्णय ही निश्चित रूप से किया जा सकता है न तो उनका जीवन-वृत्त ही उपलब्ध है । 4. इसका जितना साहित्य लिखित रूप में अबतक प्राप्त है उससे सौ गुना अधिक लोकसाहित्य अलिखित अवस्था मे विद्यमान है ।" (पृ॰- 35-37) ।

दोसरा जगेह कहीं डॉ॰ मैनेजर पांण्डेय लिखले बाड़न कि हिन्दी साहित्य के देखा-देखी भोजपुरी के काल विभाजन सही ना होई । एह में 'रीतिकाल' लेखा कवनो काल त हइये नइखे ।

हमरा जानते एह सब बात के ध्यान में राखत ऊपर के स्रोतन का अलावे डॉ॰ उदय नारायण तिवारी के शोध-प्रबंध 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' के अध्ययन करत जवन तथ्य सामने आवता, उ कुछ एह तरह से बा–

भोजपुरी साहित्य के प्रारंभिक रूप 8वीं शताब्दी से 11वी शताब्दी तक के सिद्ध आ नाथ पंथ के वाणी में मिलेला । एह बात के हामी अपना किताब 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' में पंडित गणेश चौबे भी भरले बाड़न । सिद्धन के संख्या चौरासी मानल गइल बा । उन्हन में सब के रचना त एती घरी उपलब्ध नइखे बाकी जे बा, ओह में-सरहपाद, शबरपा, भुसुकपा, डोम्भिपा, कुवकुरिया आदि प्रसिद्ध कवि भइल बा लोग । इन्हन के कविता में भोजपुरी के अनेक संज्ञा आ क्रिया-पद पावल जाला ।

बाकी 12वीं शताब्दी में पंडितवर दामोदर लिखित 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' में जवन ओह समय में बनारस में प्रचलित भाषा के नमूना मिलत बा, ओह से पता चलत बा कि भोजपुरी के विकास हो गइल रहे । एह में प्रयोग में आइल छात्र, प्रज्ञा, स्मृति, धर्म अदि तत्सम शब्द एकरा परिनिष्ठित विकसित रूप के परमाण बा । एह से ईहो पता चलता कि भोजपुरी भाषा में कथा-कहानियो के रचना होखे लागल रहे ।

'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' के भाषा के डॉ॰ सुनीति कुमार चाटुर्ज्या 'कोसली' के प्राचीन रूप बतइले बाड़न बाकी एह में बहुत प्रयोग त अइसन भइल बा जवन आगे भोजपुरी में जइसे के तइसे पावल जाला । जइस का करें, काहे, कहाँ, ईहा, लाजे, लौंडी, ढूक, कापास, बाछा आदि ।

डॉ॰ विश्वनाथ प्रसाद के त अपना किताब– 'भोजपुरी के कवि और काव्य' में कहनाम बा कि– "संभव है, प्राचीन काल में कोसली और भोजपुरी में और भी अधिक समरूपता हो । इस दृष्टि से उसमें भोजपुरी के विकास का

प्रमाण प्राप्त करना अनुचित नहीं है । 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' के लेखक पंडित दामोदर ने स्वयं अपनी भाषा को केवल अपभ्रंश बताया है, कोसली नहीं ।"

बात चाहे जे होय, एही शती में चौरंगीनाथ सिद्ध आपन 'प्राण संकली' नामक किताब लिखलन । 'प्राण संकली' में– साल वाहन धरे, हमरा, झूठ बोलीला, भइला, सासत, हाँथ-पाँव, कटाय, निरंजन बने, सनमुष देखीला, नमस्कार करीला, नवाइला माथा, आसीरवाद पाइला, दीला फल,पी लीला आदि शब्द परिमार्जित भोजपुरी के मिलेला ।

एह से भोजपुरी साहित्य के इतिहास के काल-विभाजन जदपि अबहीं ले कवनो विद्वान साफ-साफ प्रामाणिक रूप से नइखन कर सकल तबहूँ अनेक विद्वान एह संबंध में आपन-आपन मत प्रकट कइलहीं बाड़न । असल में काल के नामकरण कई नजरिया से कइल जाला । कबहूँ ओके प्रवृति के बहुलता देखत कइल जाला, कबहूँ राजनीतिक आन्दोलन पर ध्यान राखल जाला । केहू विद्वान कवनो साहित्यिक नेता का सहारे काल-विभाजन के नामकरण करेलन त केहू कवनो शासक से जोड़ के ओके देखेलन । देखे में त सब नजरिया ठीके लागता बाकी कवनो नाम देला का पहिले काल के विभिन्न प्रभावन के पर्यवेक्षण पहिला काम होय के चाहीं, राजनीतिक परिवर्तन त जिनगी के ऊपरा तल पर चलेला बाकी सामाजिक परिवर्तन जिनगी के आन्तरिक पक्ष के प्रभावित करेला ।

डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय सब कठिनाई बतावत भोजपुरी साहित्य के पाँच काल में बँटले बाड़न–

1. सिद्ध साहित्य, 2. नाथ साहित्य, 3. सन्त साहित्य, 4. लोकसाहित्य 5. आधुनिक साहित्य । इहाँ के भोजपुरी सन्त साहित्य के काल सन् 1400 से शुरु मनले बानी जवन मोटा-मोटी कबीर के जनम 1456 वि॰ यानी 1400 ई॰ काल ह ।

पं॰ गणेश चौबे जी अपना 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' निबंध में भोजपुरी साहित्य के चार भाग में बँटले बानीं–

1. संत साहित्य, 2. प्रकीर्ण लोककाव्य, 3. लोकसाहित्य, 4. आधुनिक साहित्य । पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय अपना निबंध में सिद्ध साहित्य के भोजपुरी भाषा के आदि स्वरुप मनले बानीं । ('भोजपुरी लैंग्वेज ऐंड निटरेचर इन बिहार', प्रकाशित- नेशनल हेरॉल्ड)।

'भोजपुरी पद्य संग्रह, बिहार विश्वविद्यालय' के भूमिका में डॉ॰ रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव जवन वर्गीकरण कइले बाड़न, ओह में त समूचा भोजपुरी

काव्ये समाहित लउकता, एकरा से भोजपुरी इतिहास पर कवनो प्रकाश नइखे पड़त । जइसे– "तमाम भोजपुरी कविता पर अगर एगो उड़त नजर फेंकल जाव त कलेवर का लेहाज से नीचे लिखल रूप के खाना में सभ कवितन के समेटल जा सकेला– (क) अध्यात्मवादी, (ख) राष्ट्रवादी, (ग) भाषात्मक आन्दोलन, (घ) अद्वैतवादी-प्रकृतिवादी, (ङ) प्रगतिवादी, (च) नवबोधनवादी ।" (भोजपुरी पद्य संग्रह (भूमिका): बिहार विश्वविद्यालय ।

श्री दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ' भोजपुरी भाषा के कवि और काव्य' के भूमिका में नीचे लिखल पाँच विभाजन कइले बानीं–

1. प्रारंभिक अविकसित काल (सिद्धकाल) : सन् 700 ई॰ से 1100 ई॰
2. आदिकाल (ज्ञान प्रचारकाल तथा वीर-काल) : सन् 1100 ई॰ से 1325 ई॰
3. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) : सन् 1325 ई॰ से 1650 ई॰
4. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) : सन् 1650 ई॰ से 1900 ई॰
5. आधुनिक काल (राष्ट्रीयकाल और विकास काल) : सन् 1900 ई॰ से 1950 ई॰ ।

असल में श्री नाथजी के समय-काल में हिन्दी भाषा के इतिहास के निर्माण-काम चलत रहे, एही से उनकर विभाजन हिन्दी साहित्य के इतिहास से प्रभावित बा । 11वीं से 16वीं शताब्दी के बीच भोजपुरी साहित्य के विकास में एगो शून्य काल मानल गइल बा । तबहूँ नाथजी के ई विभाजन पहिलका प्रयास गुने भोजपुरी साहित्य के इतिहास खातिर पहिलकी सीढ़ी बा ।

भोजपुरी नियर हिन्दी साहित्य के इतिहासो में कठिनाई आइल रहे । आजो ओके पूर्ण ना मानल जा सके । अइसन में जइसे हिन्दी भाषा के इतिहास मुख्यत: हिन्दी काव्य के इतिहास बा, वइसहीं भोजपुरी के जनम, विकास के समय आ स्थान भोजपुरी प्रदेश के ओह भाग से बा जेह से हिन्दी के इतिहासो संबंध राखता ।

भोजपुरी भाषा के इतिहास 700 ई॰ से शुरु होता । एकर काल-विभाजन तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक आ आर्थिक परिस्थिति के आधार पर भोजपुरी भाषा क्षेत्र के ऐतिहासिक विश्लेषण करत, ओह विशेष समय में लोग के रुचि विशेष के संचार आ पोषण कवने से कइसे भइल, ओके ध्यान में राख के करे के चाहीं । कुछ एही दृष्टि से श्री रासबिहारी पाण्डेय के काल-विभाजन हेह तरेह बा–

1. प्रारंभिक काल : 700ई॰ से 1100ई॰ तक
2. चारण काल : 1100ई॰ से 1400ई॰ तक
3. संत काल : 1400ई॰ से 1800ई॰ तक
   (भक्ति, शृंगार, भोजपुरी लोकसाहित्य के विकास-काल)
4. अध्ययन काल : 1800ई॰ से 1900ई॰ तक
5. वर्तमान काल : 1900ई॰ से अबतक ।

पाण्डेयजी के ईहो कहनाम बा कि एह विभाजन में 50 से 70 बरिस आगे-पीछे हो सकेला । संतकाल के लमहर अवधि के कई भाग में बाँटल गइल बा आ 1900ई॰ तक के भक्तकालीन कवियन के एह में सामिल कइल गइल बा ।

अंग्रेज शासन-काल में भोजपुरी का संबंध में जे संकलन, अध्ययन आ अनुसंधान काम भइल आ भोजपुरी के प्रसार कई द्विपन में भइल फेर एह काल में भोजपुरी भाषा के इतिहास आ भूगोल के जे निर्माण भइल, एही से स्वतंत्र अध्ययन का दृष्टि से अध्ययन-काल नामकरण से कर देहल गइल बा । वर्तमान काल के अन्तरगतो लोकसाहित्य के अध्ययन छोड़ल नइखे गइल । (भोजपुरी भाषा का इतिहास : पृ॰ 14-15) ।

●

भोजपुरी काव्य : उद्भव आ विकास

भोजपुरी पले लोकगीतन आ लोकगाथाअन के एगो पुरान, लमहर आ समृद्ध भंडार बा, जवना में से समय-समय पर संग्रह करे आ प्रकाश में ले आवे के प्रयास भइल । जइसे–'कविता-कौमुदी', 'हमारा ग्राम्य गीत' (दुनों के संग्रहकर्त्ता- रामनरेश त्रिपाठी), 'भोजपुरी ग्राम गीत : भाग 1-2' (कृष्णदेव उपाध्याय), 'भोजपुरी गीतन में करुण रस' (दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ'), 'भोजपुरी ग्राम्यगीत' (डब्लू॰ जी॰ आर्चर), 'धरती गाती है', 'बेला फूले आधी रात', 'धरती के गीत', (तीनों के संग्रहकर्त्ता- देवेन्द्र सत्यार्थी) आदि ।

इहाँ लोकगाथाअन के छोड़ के फुटकर लोकगीतन के जो वर्गीकरण कइल जाय त एके– 1. संस्कार गीत (जनम से मरण तक के संस्कार के अवसर पर गावल जायेवाला गीत (खेलवना, अबटन, सोहर, झूमर, गारी, देवी-देवतन के गीत आदि), 2. मौसम गीत (कजरी, होरी, चइता, बारहमासा आदि), 3. त्योवहार गीत (छठ, पीड़िया, गोधन आदि), 4. जाति-गीत (नेटुआ, धोबी, दुसाध, अहीर के खास गीत), 5. श्रम गीत (रोपनी, कटनी, जँतसार आदि)आ 6. विविध समय के गीत (लइकन के खेल गीत, पँराती, संझा, निर्गुन आदि) में बाँट के देखल जा सकेला । आखियान करे के बात ईहो बा कि अइसन लोकगीतन के रचना-धारा कबो सूखल ना, होत रहल आ आजो हो रहल बा । ई अलग बात बा कि केहू एके लोककाव्य मानेला, केहू ना ।

एकरा बाद चौरासी सिद्धन लोगन द्वारा अपना कविता में जवन भाषा के प्रयोग कइल गइल बा, ओके भोजपुरी त ना कहल जाई बाकी सिद्ध लोग के बाद संत कवियन में, इहाँ तक कि अवधी के जायसी आ तुलसीदास के भाषा में भोजपुरी के संज्ञा आ क्रिया-पद के प्रयोग जहाँ-तहाँ मिलेला । जइसे– 'इहाँ कोंहर बतिया कोउ नाहीं । हमहूँ कहब अब ठकुर सुहाती' आदि (तुलसीदास)। एह में कबीरदास त भोजपुरी के आदि कवि मानल जालन । जदपि उनका भाषा के पं॰ रामचन्द्र शुक्ल अपना 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में सधुक्कड़ी कहले बाड़न बाकी कबीरदास के अनुसार ('बोली हमरी पुरुब की, हमें लखे नहीं

कोय । हमको तो सोई लखै, जो धुर पुरुब का होय ।।') उनकर भाषा भोजपुरी रहे । एने आके डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय एके डंका के चोट से साबित करे के कोसिस कइले हां । एतने ना, कबीर का साथे निर्गुण सम्प्रदाय के उनकर चेलो लोग अपन बात कहे खातिर भोजपुरी के माध्यम बनवले बा । रामभक्ति शाखा के अनेक मधुरोपासक कवियो लोग एह भाषा के सहारा ले ले बा । हद बा कि कबीर के परम्परा के जे कवि भोजपुरी प्रदेश के बाहरो से आइल रहे, ऊहो कबीर के देखा-देखी एही भाषा के सहारा लेलक । जइसे- फैजाबाद के पलटू साहब, विन्ध्य प्रदेश के धरमदास आदि ।

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के कहनाम बा कि– "संत कबीर द्वारा अपनाये जाने के कारण भोजपुरी का महत्व उनके पीछे और भी बढ़ गया । उनके नाम पर चलाये गये कबीर पंथ का अनुसरण करनेवाले लोगों ने उनकी वाणी को आदर की दृष्टि से देखा और उनका अनुसरण किया ।" (भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखायें; पृ॰- 86)।

एह तरह से निरगुण आ सगुन दुनों सम्प्रदाय के संत आ भक्त कवि लोग अपना रचना से भोजपुरी के भंडार भरले बाड़न । जइसे- दरियादासी सम्प्रदाय, सरभंगी सम्प्रदाय, बाबरी सम्प्रदाय, शिवनारायणी सम्प्रदाय आदि । एह में से कुछ लोग के रचना त आजो अप्रकाशित मठ आदि में पाण्डुलिपि का रूप में पड़ल बा ।

डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय अपना 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास' (प्रकाशित : भारतीय लोकसंस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी : 1972 ई॰) में एह क्रम में– धरमदास, धरनीदास, पल्टू दास, दरियादास, बाबा किनाराम, भिनक राम, भीखम राम, टेकनराम, योगेश्वराचार्य, शंकरदास, रामशरण, रुपकलाजी, लक्ष्मीनारायण दास 'पौहारी', रामाजी, लक्ष्मी सखी, कामता सखी, बाबरी साहेब, बीरू साहब, बूला साहब, गुलाल साहब, भीखा साहब आदि के सौदाहरण उल्लेख कइले बाड़न ।

कबीरदास के कवितन के चारगो उदाहरण भोजपुरी कहके डॉ॰ सुनीति कुमार चटर्जी अपना किताब में देले बाड़न । डॉ॰ उदयनारायण तिवारी अपना शोध-प्रबंध 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' में छव गो उदाहरण ढूढ़ले बाड़न । हम एह छोट लेख में उहे पंक्ति उद्धृत करत बानी जवन खाँटी भोजपुरी लागता । जइसे–

1. कनवा फराई जोगी जटवा बढ़वले
दाढ़ी बढ़ाई जोगी होइ गइले बकरा ।

....

कहत कबीर सुनो भई साधो
जम दरवजवा बान्हल जइबे पकरा ।

2. बाबा घर रहलू त बबूई कहवलू
सँया घर चतुर सेयान ।
चेतब घरवा आपन रे ।।

3. का, ले जइबो, प्रीतम घर अइबो
गाँव के लोग सब पूछन लगीहैं
तब हम का रे कतइबो ।।

4. सूतल रहलौं में नींद भरिहो
पिया दिहले जगाय ।
चरन कँवल के अंजन हो
नैना लेलू लगाय ।

5. तोरा हीरा हिराइल बा किंचड़े में ।

6. अइली गवनवा के सारी हो,
अइली गवनवा के सारी हो ।

7. कौन ठगवा नगरिया लूटल हो ।

इहो ध्यान देबे लायक बात बा कि जइसे-जइसे बाद में संत लोग आइल बा, स्वभावत: भोजपुरी भाषा उनका रचनन में साफ लउकता । जइसे–

'कहवाँ से जीव आइल, कहवाँ समाइल हो ।
कहवाँ कइल मुकाम, कहाँ लपटाइल हो ।' (धरमदास)

'हंसा कर ना नेवास अमरपुर में ।' (भीखमदास)

'अवध नगरिया चलली बरियतिया, हे सुहावन लागे
जनक नगरिया भइले सोर, हे सुहावन लागे ।' (रामाजी)

'सखी तोरे पियवा देइ गइले एगो पतिया ।' (लक्ष्मी सखी)

आदि ।

आधुनिक काल

भोजपुरी के आधुनिक काल कब से मानल जाय, एह पर विवाद हो सकेला । डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय अपना इतिहास में एकर शुरुआत 1875 ई॰ से मनले बाड़न । उनका अनुसार देश में पहिल ऐतिहासिक आजादी के लड़ाई त 1857 ई॰ में भइल बाकी भोजपुरी में काशी के रामकृष्ण वर्मा 'बलवीर' के एगो किताब 'बिरहा-नायिका-भेद' 1900ई॰ में प्रकाश में आइल । एकरा पहिले 1895ई॰ में प्रकाशित किताब : तेगअली 'तेग' के 'बदमाश-दर्पण' बा जवन भारत जीवन प्रेस से छापल गइल रहे । लगभग एही काल में पं॰ दूधनाथ उपाध्याय के गोरक्षा पर लिखल- 'गो-विलाप-छन्द' प्रकाशित पावल जाले । कहल ईहो जाले कि उपाध्याय जी बलिया के वीर रस के कवि रहस आ 'भरती के गीत', 'भूकम्प पचीसी' दूगो आउर उनकर रचना प्रकाशित भइल रहे । एह तरहे से 19वीं शताब्दी के चउथा चरण में भोजपुरी लिखित साहित्य के परम्परा आगे बढ़त मिलता जवन आजो जारी बा ।

एह काल के डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय तीन भाग मे बाँट के अपना 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास' में अध्ययन कइले बाड़न । जइसे–

1. प्रारंभिक काल : सन् 1875ई॰ से 1920ई॰ तक
2. विकास काल : सन् 1920ई॰ से 1947ई॰ तक
3. उत्कर्ष काल : सन् 1947ई॰ से आजतक ।

प्रारंभिक काल– भोजपुरी साहित्य के प्रारंभिक काल के कुछ कवियन के ऊपर चर्चा हो चुकल बा । एकरा अलावे बाबा बुलाकीदास (1732ई॰ के आस-पास), बुल्ला साहेब (सम्वत् 1689 वि॰), बाबू अम्बिका प्रसाद (19वीं शताब्दी के अंतिम चरण) आ विसराम के आविर्भावो एही काल में भइल रहे । एह में बुलाकी दास के रचना लोकगीतन के रूप में पावल जाला । ओके 'चैता' भा 'घाटो' कहल जाला । जइसे–

'मोरे रे अँगनवा चनन के री गछिया ताहि चढ़ि कुरुरे काग रे ।'

अथवा-"'दास बुलाकी' चइत घाँटो गावे हो रामा गाई-गाई
'कुन्द कुंवरि' समुझावे हो रामा, गाई-गाई ।"

बाबू अम्बिका प्रसाद के 'भजनावली' नाम से एगो किताब प्रकाशित रहे । इनकर कुछ कविता के उदाहरण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपना 'हिन्दी भाषा' नामक पुस्तक में देहले बाड़न । इनकर एगो गीत त कुछ फेर-बदल का साथे आजो सुने में मिल जाला–

'मोरा पिछुअरवा लीला रंग के खेतवा, बलमु हो, लील रंग चुनरी रंगा दऽ ।'

एने भोजपुरी के पहिल दलित-साहित्य कह के जवन हीरा डोम के कविता 'अछूत के शिकाइत' के हवाला देहल जाला, उहो एही 1914ई॰ में महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पादन में निकलत पत्रिका 'सरस्वती' में छपल रहे ।

विकास काल– भोजपुरी के विकास काल के समय देखत ई सहज रूप से कहल जा सकेला कि ई काल भारत में गाँधी के आन्दोलन काल रहे । असहयोग, निलहा, नमक, भारत छोड़ो आ स्वदेशी के आवाज गूँजत रहे । लोग अंग्रेज के अत्याचार के वर्णन करत खुद के देशभक्ति के रंग में रंगे लागल रहस । एह घरी भोजपुरी में कुछ ऐतिहासक महत्व के गीत लिखइलन स, जेकर ओह घरी महत्व आ लोकप्रियता त रहबे कइल, आजो बड़ा गर्व से ओके दोसरा भाषा-भाषी का सामने राखल जाला । एह में सारण जिला के बाबू रघुवीर नारायण के 'बटोहिया गीत' (सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा से, मोर प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया ।'), प्रि॰ मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के 'फीरंगिया गीत' ('सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा, आज उहे भइल मसान रे फीरंगिया .....'), बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह के नेहरू के स्वागत में लिखल बलिदानी बलिया के महत्ता के गीत आ दोसर रचना ('जब सन्तावन के रारि भइल वीरन के वीर पुकार भइल, बलिया का मंगल पांडे के, बलि-वेदी से ललकार भइल ।') उल्लेखनीय बा । एह काल में कुछ अउर कवियन के लोकप्रियता आसमान छूअल जे सीधे आजादी के लड़ाई से त प्रभावित ना रहे बाकी ओह देशकाल के जवन असर भोजपुरिया समाज पर पड़त रहे, प्रकारान्तर से ओकर बारीक तसवीर उरेहलक । एहमें- महेन्दर मिसिर के पुरबी गीत, भिखारी ठाकुर के बिदेसिया गीत आ बिसराम के बिरहा, गीतन के अंगूठी में नगीना मतिन चमकेला । दुर्गा प्रसाद सिंह 'नाथ' भी एही काल में भोजपुरी के सेवा कइले ।

उत्कर्ष काल– उत्कर्ष काल में जदपि डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय कविता के साथे-साथ गद्यो के मूल्यांकन कइले बाड़े बाकी हमार अभीष्ट एहू काल में खाली भोजपुरी काव्ये रही । एह काल तक आवत-आवत भोजपुरी काव्य के पातर स्रोत एतना चौरा, गहिराह आ कथ्य-शिल्प का दिसाईं व्यापक हो गइल रहे कि सबके हिगरावल एह लेख के छोट काया में संभवे नइखे बुझात । तबो डॉ॰ रामनिवास पाण्डेय के गीत-

'टिसुना जागलि सिरि किसुना के देखे के त
आधी रतिये खा उठि चललि गुजरिया
चान का नियर मुँह चमकेला रधिका के

चमचम चमके ले जरी के चुनरिया
चकमक चकमक लहरि उठावे ओ में
मधुर-मधुर डोले कान के मुनरिया
गोखुला के लोग ई त देखि के चीहइले कि
राति में अमावसा का उगलि अंजोरिया ।'

आ आचार्य महेन्द्र शास्त्री के कविता- 'कमइया हमार चाट जाता, इहे बाबू भइया ।' दू दिशा कावर एक-दोसरा का विपरीत विकास कर चुकल रहे । फेर धरीक्षण मिश्र, श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती', कविवर चंचरीक, रामेश्वर सिंह काश्यप, हरेन्द्र देव नारायण, विश्वनाथ प्रसाद शैदा, मोती बी॰ ए॰, डॉ॰ मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, 'राहगीर', अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, भोलानाथ गहमरी, चन्द्रशेखर मिश्र, जगदीश ओझा सुन्दर, अर्जुन सिंह 'अशान्त', सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश', हरिराम द्विवेदी 'अलमस्त', अनिरूद्ध, भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु', दूधनाथ शर्मा 'श्याम', कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', यादवचन्द्र पाण्डेय, कुंज बिहारी कुंजन, श्रद्धानन्द पाण्डेय, कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र', कुबोध, अक्षयवर दीक्षित, रामवचन यादव 'अँजोर', लक्ष्मण पाठक प्रदीप, रामजी सिंह 'मुखिया', मैनावती देवी 'मैना', राघवशरण मिश्र 'मुँहदुब्बर', सिपाही सिंह 'श्रीमन्त', गणेशदत्त किरण, रामनाथ पाठक 'प्रणयी', धीरेन्द्र प्रसाद सिंहा 'धवल', शाहाबादी, 'राकेश' आदि के उपस्थिति आ उनकर काव्य-रचना ई जतावे ला काफी बा कि भोजपुरी के काव्य जगत में कथ्य आ शिल्प के दिसाईं तरेह-तरेह के प्रयोग जारी रहे । रामायण, महाभारत आ इतिहास से कथानक लेके एही काल में महाकाव्य लिखइलन स । जइसे- कौशिकायन, सेवकायन, सीता के लाल, किरणमई, द्रौपदी-विलाप आ कुँअर सिंह पर तीन-तीन को महाकाव्य । इन्हन में से कुछ के जुड़ाव त शृंगारिकता का ओर रहे, कुछ के प्रकृति का ओर आ कुछ के भक्ति, वीरता आ छंद विशेष पर त कुछ के आजादी बाद के मोह-भंग आ आर्थिक, सामाजिक विषमता विषयन पर । कुछ के कविता के दिशा समाज-सुधार का ओरो रहे । कवि मंच पर भोजपुरी कविता सुना के खूब वाहवाही पावस । कवि सम्मेलनन में भोजपुरी कवि आवश्यक समझल जाय लगलन । हाथ में रहे 'अँजोर' (पटना), 'भोजपुरी' (आरा), 'पुरवइया' (वाराणसी) जइसन पत्रिका । बीच में भोजपुरी परिवार, पटना, भोजपुरी परिषद्, जमशेदपुर; लोकसंगम, गया; भोजपुरी संसद, वाराणसी आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा

सम्मेलन जइसन संगठनन से भोजपुरी काव्य के प्रसार-प्रचार में अउर सहायता मिलल । एक ओर दोहा, सवैया, बिरहा आ पारंपरिक छंद में रचना होत रहे त दोसरा ओर हिन्दी के देखा-देखी गजल, सॉनेट, नवगीत, हाइकू भोजपुरी के शिल्प बने लागल । हिन्दी के प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद आ नई कविता के प्रभावो भोजपुरी पर पड़ल आ भोजपुरी काव्य हिन्दी से डेग मिलावे के कोसिस करे लागल ।

अद्यतन स्थिति– एती घरी समकालीन कविता के प्रभाव भोजपुरियो पर पड़ रहल बा । एह में जन-विरोधी राजनीति, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, अपराध, घोटाला, समाजवाद के विघटन के दर्द आदि सबकुछ समाहित हो रहल बा । शिल्प पुरान होय भा नया, बात आज के कहे के कोसिस जारी बा । नवगीत, गजल के बोलबाला बा त मुक्तछंदो में भोजपुरी कविता लिखा रहल बा । कविता व्यक्ति के निजी सुख-दुख से जुड़ल बा त ओके ओझल क के देश, समाज आ संसार के वर्तमान समस्यो का ओर तिकवता । एतने ना कविता केन्द्रित भोजपुरी के पहिल पत्रिका 'कविता' (त्रैमासिक : सम्पादक- जगन्नाथ) एके गति दे रहल बा । दोसरो पत्रिका कविता विशेषांक निकाले पर बाध्य हो रहल बाड़ी । जवन कवि लोग एह अद्यतन काल में अद्यतन प्रयोग का साथे सक्रिय बाड़न, ओह में कुछ नाम बा– सर्वश्री पाण्डेय कपिल, जगन्नाथ, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष', स्वर्णकिरण, बच्चन पाठक सलिल, रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव, पाण्डेय सुरेन्द्र, पी॰ चन्द्रविनोद, डॉ॰ अशोक द्विवेदी, रमता, नीरद, वैद्यनाथ 'विभाकर', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, जौहर शफीहाबादी, तैयब हुसैन 'पीड़ित', रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव (जुगानी भाई), कैलाश गौतम, शशिभूषण लाल, अंजन, सूर्यदेव पाठक 'पराग', सुभद्रा वीरेन्द्र, सोमेश, प्रो॰ ब्रजकिशोर, प्रकाश उदय, विजेन्द्र अनिल, कुमार विरल, सत्यनारायण, सुनील कुमार पाठक, तंग इनायतपुरी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, मनोज भावुक, मिथिलेश गहमरी, कृष्णानंद कृष्ण, सुरेश कांटक, ब्रजभूषण मिश्र, रिपुञ्जय निशान्त, बलभद्र आदि । एह कोटि में कुछ नाम स्वर्गीय होके भी अमर बा । जइसे– परमेश्वर शाहाबादी, विश्वरंजन, नरेन्द्र शास्त्री, गोरख पाण्डेय, शारदा प्रसाद, जीतराम पाठक आदि ।

थोड़े में भोजपुरी कविता के आकाश जमीन से जुड़ियो के अपना संकीर्णता से दिनोदिन उबर रहल बा । ई ओकरा खातिर शुभ लक्षण बा ।

भोजपुरी कहानी : उद्भव आ विकास

कविता के बाद भोजपुरी साहित्य में कहानी सबसे लोकप्रिय विधा ह आ एकर विकासो इहाँ खूब भइल बा । नाटके लेखा कहानियो मनुष्य जाति के इतिहास का संगही शुरु होला आ एकर वाचिक परम्परा आदिम काल से रहल बा । भोजपुरी पाले लोककथाअन के एगो विशाल, व्यापक आ कीमती खजाना बा, जवन थोड़ा-बहुत फेर-बदल का साथे पूरा भोजपुरी-क्षेत्र में दादी-नानी का मुँहे त कहले जाले, ई दोसरो भाषा से कुछ लेन-देन कइले बा । अइसहीं गिरमिटिहा मजदूरन साथे भोजपुरी के लोककथा विदेशों में जा बसल बा । ई लोककथा खाँटी पद्यों में लमहर कथा का रूप मे भोजपुरी प्रदेश में बाड़ी, जेके लोकगाथा कहल जाले । जइसे- आल्हा, सोरठी-बृजाभार, लोरिकायन, नयकवा-बनजारा आदि ।

आखियान करे के बात बा कि एकर शुरुआत 'कब भइल-के कइलक?' ई कहल कठिन बा बाकी सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव के ई कहानी जीअत दस्तावेज हईसऽ, ओह से प्रभावितो भइल बाड़ीसऽ आ आज या त अजायब घर के चीज बनल जाताड़ी सऽ भा नष्ट होय के कगार पर बाड़ीसऽ । बाकी प्राय: 'एगो राजा रहले बाबू, उनका बड़ा रहे काबू' से लगभग शुरु होके ई कहानी साधारण मनई के सुखो-दुख अंगेजले बाड़ी आ नारियो जाति के करुणा झाँके में कोताही नइखी कइले ।

अबतक के खोज में पहिल लिखित कहानी का रूप में ईसा से करीब 6000 से 8000 पूर्व दजला-फुरात नदी का किनारे पनपल सुमेरी-अक्कादी सभ्यता के खुदाई में मिलल एगो शिलालेख बतावल जाले, एह में खोदल गिलगमेश के कहानी साँच पूछीं त जिए खातिर संघर्ष करत आ हरदम ओकरा संघर्ष के मटियामेट होत आदमी के शाश्वत कहानी ह । जवन तबो रहे, आजो कमोवेश ऊहे बा ।

जहाँ तक भोजपुरी साहित्य में पहिल लिखित कहानी के शुरुआत के सवाल बा त ई हिन्दियो से लगभग चार दशक बाद शुरु भइल । ई लिखल त गइल होई आजादी के दौरान बाकी प्रकाश में आइल आजादी के तुरंत बाद ।

भोजपुरी के पहिलकी कहानी-पुस्तक 'जेहल के सनदि' ह जवन 1948

में बिहार प्रेस लि॰, पटना से छपल । लेखक बानीं- श्री अवध बिहारी सुमन जे बाद में दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के नाम से चर्चित भइलीं । आ एही साल विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त के कहानी 'केहू से कहेब मत' 'भोजपुरी' नाम के एगो भोजपुरी पत्रिका में छपल, जवन एके अंक निकल के रह गइल । एह पत्रिका के सम्पादक रहीं- आचार्य महेन्द्र शास्त्री ।

एह कहानियन के जो पढ़ल जाय त सन् 47 के आजादी के उत्तेजक वातावरण का साथहीं आदर्श आ नैतिक मूल्यन के जोगावे के छटपटाहट देखाई दी । कहानियन के शिल्प आ कसाव बहुत ढीला-ढाला बा तबहूँ 'केहू से कहेब मत' बिना शक आधुनिक बोध के पहिल भोजपुरी कहानी बा ।

फेर त 60 के दशक में आचार्य शिवपूजन सहाय के कहानी 'कुन्दन सिंह केसर बाई' (अँजोर : वर्ष-1; अंक- 3; पटना) आइल । ई भोजपुरी के अभिव्यंजका शैली के अच्छा दृष्टान्त बा । एही साल 'अँजोर' के अप्रैल अंक में रामेश्वर सिंह काश्यप के 'मछरी' कहानी छपल जवन सेक्स के सच्चाई आ त्रासदी दूनों दर्शावत बा । फेर त वृन्दावन बिहारी के कहानी 'होड़' (प्रकाशित- 'भोजपुरी' : सम्पादक- रघुवंश नारायण सिंह) आ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के कहानी 'नवरतने', आदर्श, अध्यात्म आ इतिहास के मिलल-जुलल रूप रहे ।

अबतक समाज में मोहभंग के स्थिति शुरु हो गइल रहे । आजादी के दौरान जवन सुनहरा सपना भारत, खास क के भोजपुरी क्षेत्र के लोग देखले रहे, ऊ छितराये लागल । महँगाई, बेरोजगारी, सत्ता-लोलुपता, भ्रष्टाचार आ टुच्चा राजनीति सामने आ गइली सऽ । सुभाविक रहे कि एकर प्रभाव भोजपुरियो कहानी पर पड़ित । आ ऊ पहिले हिन्दी कहानी पर फेर भोजपुरी कहानी पर पड़ल । पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के आरंभिक कहानी 'गुरुदक्षिणा' बेरोज़गारी के असामाजिक परिणाम सामने परोसत बा ।

एह घरी हिन्दी में 'नई कहानी' के आन्दोलन उठान पर रहे । भोजपुरी ओह से भला कइसे अछूता रहित । एहू में भाव, शिल्प, कथ्य, अभिव्यक्ति आ भाषा के डँरेर खिंचाए लागल । एहसब के आगे बढ़ावे के काम भोजपुरी पत्र-पत्रिका सब कइलनस । जइसे- 'अँजोर', 'भोजपुरी', 'माटी के बोली', 'उरेह', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'झकोर', 'भोजपुरी जनपद', 'गाँव-घर' आदि । बाकी कहानी-विधा पर केन्द्रित भोजपुरी संसद, वाराणसी से निकले वाली 'भोजपुरी कहानियाँ' भोजपुरी कहानी के परवान चढ़ावे में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कइलक । बाद मे 'भोजपुरी कथा-कहानी' आ 'चाक' भी अइसने प्रयास करे चहलक बाकी थोड़ही दूर ले ।

एती घरी भोजपुरी कथा-शिल्प का दिसाईं भइल परिवर्तन के साखी का रूप में 'आगे के लहर' (जीतराम पाठक) आ 'मुआर' (मधुकर सिंह) उद्धृत कइल जा सकेलीसऽ ।

1962 ई॰ में देश जब चीनी आक्रमण झेललक त भोजपुरी कहानी थोड़ा देर ला फेर राष्ट्रवादी आ देशभक्ति का रंग में रंगाइल लउकलीस । 'हम बूँटा पिकिंग प खूँटा' (डॉ॰ विवेकी राय), 'पनढकउवा के राति' (मदन मोहन वर्मा) अइसने कहानी रहसऽ ।

सत्तर का बाद भोजपुरी कहानियन में फेर बदलाव आइल । अबकी एकरा केन्द्र-बिंदु में आम आदमी आ उनकर समस्या रहे । एह काल के वर्णन श्री ब्रजेश कुमार पाण्डेय अपना लेख 'भोजपुरी कहानी : बढ़त डेग' (प्रकाशित : 'डुमरी कतेक दूर' (पुस्तक), प्रकाशक- अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन, सीवान इकाई : 1994) में नीके तरे कहले बाड़न-

"सत्तर का बाद से भारतीय समाज में जवन विकृति आवे लगलीस आ आम आदमी एह अराजक व्यवस्था के निस्सहाय दर्शक होखे लागल – ओकरा के उकेरे के कोशिश कहानियन में भइली स । टूटत-बूड़त सपना, धूर में सउनात जिनगी, हरेक डाढ़ी पर बइठल उल्लूअन के जमात के उजाड़े वाला बोली आ सबसे बड़हन - एह दोष के खोजत-बीनत आँखिन में व्यापत पीड़ा - एह सब के कवनो ना कवनो तरे वाणी देवे के प्रयास कहानियन में भइलीस । पात्र आ परिवेश त बदलते रहे अब ओह पात्रन के मनोवृत्तियन में बदलाव देखाई देवे लागल । एह चक्कर में कहीं-कहीं त समस्या आ ओकर समाधान के लेखकीय आरोपित कोशिश साफ-साफ बुझाय लागता तबहूँ कुल मिला के ई सार्थक प्रयास कहल जाई । तैयब हुसैन 'पीड़ित', कन्हैया सिंह 'सदय', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, नरेन्द्र शास्त्री, कृष्णानंद कृष्ण, पी॰ चन्द्रविनोद, प्रो॰ ब्रजकिशोर आदि लोग कहानी के नया रूप-रंग आ ढाँचा देवे के पुरहर कोशिश कइल । पीड़ित जी अपना 'बिछऊँतिया' में कुछ नया प्रयोग कइनीं- कुछ नया प्रतीक ढूढ़े के कोशिश कइनी । ई भोजपुरी कहानियन के नया मुहावरा गढ़े के ईमानदार प्रयास रहे । कहानी के अंत आ समाधान पाठकीय चेतना पर छोड़े के शुरुआत भइल ।" (पृष्ठ- 122) ।

हिन्दी के देखा-देखी भोजपुरियो कहानी में दक्षिण-वाम के चर्चा होखे लागल । कुछ कहानियन खुल के एह प्रभाव में लिखइबो कइलीस । जइसे- 'निदान' (रजनीकान्त राकेश), कुछ मनोवैज्ञानिको कहानी सामने आइल । जइसे- 'सकदम' (ब्रजकिशोर दूबे) भा पुरान विचार के ठेठ कहानियो अइली

सऽ । जइसे- 'सतहवा' (अक्षयवर दीक्षित) आदि ।

भोजपुरी कहानी लिखे में महिलो लेखिका आगे भइली। राधिका देवी श्रीवास्तव के 'धरती के फूल', साइत महिला लेखिका के पहिल संग्रह ह । ओकरा बाद त 'जिनगी के परछाहीं' (रूपश्री) आ बिन्दु सिन्हा, मधुवर्मा, मालती त्रिपाठी, उषा वर्मा साथे कुछ अउर नाम जब-तब लउकत रहल ।

हास्यो-व्यंग्य कहानी पर कलम चलल । जइसे- 'लहर के बोल' (ब्रजकिशोर दूबे), 'उरिन' (राजगुप्त) आ श्री मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' साथे बालेन्दु शेखर तिवारी के कहानी आदि ।

तत्काल शोषण, उत्पीड़न, भूमि संघर्ष, साम्प्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता, पृथकतावाद आ भूमण्डलीकरण के परिवेश बा । एह में से कुछ पर त भोजपुरी में कहानी-पुस्तक भा फुटकर कहानी आ गइल बाड़ीसऽ । जइसे- 'धुआँ' (प्रो॰ ब्रजकिशोर), 'केरा के टुकी-टुकी पतई' (पी॰ चन्द्रविनोद), 'रावन अबहीं मरल नइखे' (कृष्णानन्द कृष्ण), 'हिन्दू सुग्गा' (पाण्डेय सुरेन्द्र), 'अम्मा' (नरेन्द्र रस्तोगी), 'एगो अउर मीरा' (भगवती प्रसाद द्विवेदी), 'तलफत आग' (शशिभूषण सिंह), 'तिरिया जनम जनि दीह' (मिथिलेश्वर), 'पोसुआ' (डॉ॰ अशोक द्विवेदी), 'चुल्हा सुनुग गइल रहे' (भगवती प्रसाद द्विवेदी), 'एक टुकी साँच' (तैयब हुसैन 'पीड़ित') आदि ।

कुल मिलाके 1948 से 1993ई॰ तक लगभग पचास कहानी-पुस्तक के प्रकाशन हो चुकल रहे । ('भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' : पं॰ गणेश चौबे; भोजपुरी अकादमी, पटना) । एह सब व्यक्तिगत संग्रहन के अलावे कुछ संपादित संकलनो प्रकाशित भइली स । जइसे– भोजपुरी साहित्य परिषद् जमशेदपुर से - प्रो॰ चन्द्रभूषण सिन्हा के सम्पादन में - 'भोजपुरी कहानी संग्रह; भोजपुरी संसद, वाराणसी से राजबली पाण्डेय के सम्पादन में 'भैरवी क साज'; भोजपुरी साहित्य मंदिर, वाराणसी से राधामोहन 'राधेश' के सम्पादन में 'प्रेमकथा'; भोजपुरी संस्थान, पटना से सिपाही सिंह 'श्रीमन्त' आ कृष्णानन्द 'कृष्ण' के सम्पादन में– 'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के'; भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना से रूपश्री के सम्पादन में– 'खोंता से बिछुड़ल पंछी' । इहँही से महिला कथाकारन के कहानी संग्रह– 'पंछी' आ एही प्रकाशन से प्रो॰ ब्रजकिशोर के सम्पादन में– 'लहर के बोल'; 'सेसर कहानी भोजपुरी के' आ 'कथा सरोवर' । एने आ के एगो संग्रह भोजपुरी अकादमी, पटना से भी प्रकाशित भइल ह जेकर सम्पादन कइले बानीं श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह ।

कहक गो भोजपुरी पत्रिका आपन-आपन कहानी विशेषांक निकलले बा ।

जइसे– 'भोजपुरी माटी', 'बटोहिया', 'पाती', 'कोइल', 'झकोर', 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आदि ।

हिन्दी के देखा-देखी भोजपुरी में कुछ लघुकथा लिखाये के काम भइल बा जवन पहिले त 'भोजपुरी कहानियाँ' आ दोसर-दोसर पत्रिकन में हाशिया पर छपत रहे, बाद में अलग से संगहो अइलन स । अइसनका में 'छोटी-मुटी गाजी मियाँ' (प्रो॰ चन्द्रभूषण सिन्हा : 1964), 'जमीन जोहत गोड़' (रामनारायण उपाध्याय : 1982), 'टुकी-टुकी जिनगी' (सम्पादक- प्रो॰ ब्रजकिशोर आ भगवती प्रसाद द्विवेदी : 1990), 'थाती' (भगवती प्रसाद द्विवेदी) आ 'बिगुल' (संपादक- सूर्यदेव पाठक 'पराग' के 4 आ 5वाँ अंक) ।

निष्कर्ष सरूप कहल जा सकेला कि भोजपुरी कहानी अपना एह पाँच दशक के यात्रा में ढेर उभर-खाबर रास्ता तय कइले बा । ऊ आदर्शवादी रहल, आदर्शोन्मुख यथार्थवादी आ अंत में यथार्थवादी भइल । शिल्पो में 'एगो राजा रहले' के लोककथात्मकता से शुरु होके सपाटबयानी होत आज बिम्ब, प्रतीक आ फंतासी के दुनिया में घूम रहल बा । आजादी से शुरु होके देशकाल के राजनीति, आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आ सांस्कृतिक प्रभाव त एकरा पर पड़बे कइल, हिन्दी में जवन बीच-बीच में नई कहानी, समान्तर कहानी, अकहानी, आम आदमी के कहानी, समकालीन कहानी आदि आन्दोलन चलल, एकरो प्रभाव भोजपुरी कहानियन पर पड़ल बा । कारण एक त दुनों के एके भाषा देवनागरी बा । पढ़वइया पाठक लगभग समान आ कइक गो लेखक त समान रूप से हिन्दी आ भोजपुरी दुनों के कथा-लेखन में कलम चलावत रहल बा ।

कुछ लमहरो कहानी लिखायेल, जेके हिन्दी में लम्बी कहानी कहल जाला । कुछ देश-विदेश के दोसरो भाषा से अनुवाद आइल आ कुछ कहानियन के नाट्य रूपान्तर प्रस्तुत भइल ।

एह दिशा में अद्यतन उपलब्धि ई बा कि साहित्य अकादमी, दिल्ली अपना मुखपत्र के एगो अंक भोजपुरी पर केन्द्रित क के, डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय के भोजपुरी का सम्बन्ध में एगो लमहर भूमिका का साथे कुछ चुनल भोजपुरी कहानियन के अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित कइलखऽ । फेर एही कहानियन के उर्दू में अनुवाद उर्दू अकादमी, दिल्ली अपना मुखपत्र में छपलखऽ ।

कहल जा सकेला कि भोजपुरी के कहानी डेगा-डेगी चल के अब सरपट उदरे लागल बा बाकी एह कम्प्यूटर आ इन्टरनेट-युग में ओकरा अउर डेगरगर चले के पड़ी ।

●

भोजपुरी उपन्यास : उद्भव आ विकास

उपन्यास के शब्दिक अर्थ होला- सामने रखल । ई पाठक के सामने कवनो संदेश भा आदर्श रखला के मतलब बा । साफ बा कि उपन्यास का माध्यम से उपन्यासकार पढ़वइया भा समाज के सामने कवनो संदेश, उद्देश्य भा आदर्श राखे के कोशिश करेला ।

उपन्यास आ कहानी दुनों के गिनती कथा-साहित्य में कइल जाला बाकी जहाँ उपन्यास गद्य में कहल कवनो जीवन, पात्र भा परिस्थिति के सर्वांग चित्रण ह, उहाँ कहानी एह में के कवनो अंशविशेष के गझिन चित्रण ह । उदाहरण से एके कुछ एह तरेह समुझावल जा सकेला कि जो केहू दरवाजा खोल के कवनो फुलवारी के वर्णन करे बइठी त ओकरा ना खाली फूल, पत्ता, काँटा, पेड़, घास-फूस बलुक आस-पास के सब परिवेश लउकी । इहाँ तक कि फूल पर मंड़रात भौंरा, तितली, जड़ में लागल कीड़ा आ आसमान-जमीन भी । बाकी जो एह व्यापकता के उल्टा ओह फुलवारी के केहू कवनो बारीक सूराख (छेद) से देखी त हो सकेला, ओह से ओकरा एगो फूल, दू-चार गो पत्ता का अलावे कुछुओ देखाई ना दी आ देखवइया के पूरा शक्ति आ क्षमता के साथे अपना के ओही पर केन्द्रित करे के पड़ी । अब समुझलीं, पहिल परिस्थिति उपन्यास ह, आ दोसर कहानी ।

जो काव्य से उपन्यास के तुलना कइल जाय ता मानल जाला कि जीवन के कोमलता काव्य में स्थान पावेला आ खुरदुरापन उपन्यास में । एही से उपन्यास के जीवन के यथार्थ महाकाव्य कहल गइल बा । हिन्दी के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के त कहनाम बा कि– "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ । मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है ।"

भोजपुरी के पहिल उपन्यासकार रामनाथ पाण्डेय के कहनाम बा कि– "हमरा समुझ से उपन्यास आदमी के वास्तविक जिनगी के एगो काल्पनिक चित्र होला । यथार्थ चित्र भइलो पर जब ले कल्पना के एगो कोट ना चढ़े, चित्र चटकदार आ मनोरंजक ना बने । ऐतिहासिक कथा साँच रहलो पर जबले

कल्पना के संजोग ओकरा ना होखे ऊ उपन्यास ना बन सके । दोसरा शब्द में इहो कहल जा सकेला जे उपन्यासकार कवनो काल्पनिक कथा के सृजन क के ओकरा में वास्तविक जिनगी भरेला ।" (पुस्तक : 'डुमरी कतेक दूर' : सम्पादक- अक्षयवर दीक्षित, डॉ॰ तैयब हुसैन पीड़ित, प्रकाशक- अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन, सीवान जिला ईकाई, पृष्ठ- 95) ।

इहे कारण बा कि कवनो उपन्यास साहित्य में उपन्यास विधा के विकास बाकी विधा के बहुते बाद में भइल । भारत के उपन्यास आजो विदेशन के उपन्यासन से पीछे एह से मानल जाला कि हमनी के जीवन पछिम के जटिल जीवन के अपेक्षा आजो सहज-सरल बा ।

जहाँ तक भोजपुरी गद्य के सवाल बा त भोजपुरी गद्य के शुरुआत त बहुत पहिले से हो चुकल रहे । भोजपुरी के लोकसाहित्य में लोककथो के मजगर भंडार मिलेला । एह मौखिक परंपरा के कहानियन में कुछ कहानी त अइसनो मिलेली जवन कुछ ना-नू के साथ उपन्यास का कोटि में स्थान पा सकेली । अइसन ओकर लमहर कद, कथा के बीच कथा, चरित्र के बहुलता आ विविधता देखत कहल जा सकेला ।

बाकी भोजपुरी लिखित गद्य साहित्य के रूप गोरखनाथ के रचनन में, :दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' आ कुछ-कुछ पुरान दान-पत्र भा दस्तावेज में देखल जा सकेला जेकरा के पूरा तरेह भोजपुरी ना कहल जा सकेला । अइसहीं हिन्दी गद्यकार सदल मिश्र, मुंशी इन्शाअल्ला खाँ, लल्लूलाल आ सदासुख लाल के रचनन में जहाँ-तहाँ भोजपुरी झलकी । अइसन हिन्दी के गद्यकारन में उनका भोजपुरी भाषा-भाषी भइला का वजह से भइल बा । जइसे- प्रेमचंद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन, भगवतशरण उपाध्याय आदि के रचनन में ।

बाकी अबतक के जानकारी में भोजपुरी कहानी लेखा भोजपुरीउपन्यास के जनमो आजादी के बाद भइल । उपन्यास ह– 'बिंदिया' आ उपन्यासकार बानीं रामनाथ पाण्डेय । एकर प्रकाशन पहिल बेर 'शेखर प्रकाशन', रतनपुरा, छपरा से 1956ई॰ में भइल रहे । दुसरका बेर ई भोजपुरी संसद वाराणसी से प्रकाशित भइल । उपन्यास के कहानी गँवई परिवेश में एगो साधारण किसान - 'कोदई' के बेटी 'बिंदिया' आ ओकरा जान-पहचान के युवक 'मंगरा' के प्रेम पर आधारित बा । बीच में गरीबी, कोदई के बुढ़ापा आ अकसरुआ होखे के समस्या फेर 'झमना' खलनायक के उत्पातो सामिल बा । कुल मिला के उपन्यास कवनो खास समस्या के गँभिराह ढंग से नइखे पकड़त तबो ग्रामीण जीवन के चरित्र आ सुभाविक समस्या एह में साफ-साफ उजागर बा । एही से

एकर तारीफ तब राहुल सांकृत्यायन, डॉ॰ उदयनारायण तिवारी, डॉ॰ हरदेव बाहरी, डॉ॰ बाबूराम सक्सेना, शिवपूजन सहाय, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा आ डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय आदि विद्वान लोग कइलक ।

फेर त एक के बाद एक क्रमशः 'थरूहट के बउआ आ बहुरिया' (राम प्रसाद राम : 1962ई॰); 'जीअन साह' (रामनगीना सिंह 'विकल' : 1964ई॰); 'सेमर के फूल' (बच्चन पाठक 'सलिल' : 1965ई॰); 'रहनिदार बेटी' (जगदीश ओझा सुन्दर : 1966ई॰); 'एगो सुबह : एगो साँझ' (विजेन्द्र अनिल : 1967ई॰); 'डँहकत पुरवइया' (अरुण मोहन भारवि : 1973ई॰); 'गाँव के माटी' (बालेश्वर राम यादव : 1973ई॰); 'ऊसर के फूल' (नरेन्द्र शास्त्री : 1975ई॰); 'फुलसुंघी' (पाण्डेय कपिल : 1977ई॰); 'परशुराम' (अरुण मोहन भारवि : 1977ई॰); 'सुन्नर काका' (प्राध्यापक अचल : 1974ई॰); 'भोर मुसकाइल' (विक्रमा प्रसाद : 1978ई॰); 'घर टोला गाँव' (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह : 1979ई॰); 'मुट्ठी भर सुख' (विक्रमा प्रसाद : 1979ई॰); 'फुलमतिया' (योगेन्द्र प्रसाद सिंह : 1979ई॰); 'धूमिल चुनरी' (गणेशदत्त किरण : 1980ई॰); 'रावन उवाच' (गणेशदत्त किरण : 1982ई॰); 'जिनगी के राह' (रामनाथ पाण्डेय : 1982ई॰); 'खैरात' (चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह : 1982ई॰); दरद के डहर' (भगवती प्रसाद द्विवेदी : 1982ई॰); 'महेन्दर मिसिर' (रामनाथ पाण्डेय); 'इमरितिया काकी' (रामनाथ पाण्डेय); 'ग्राम देवता' (रामदेव द्विवेदी), 'अछूत' (सूर्यदेव पाठक 'पराग') आदि दू दर्जन से जादे उपन्यास प्रकाशित हो चुकल बा । कुछ के धारावाहिक रूप से पत्रिकन में प्रकाशन जारी बा ।

पं॰ गणेश चौबे जी अपना किताब 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' में दूगो अइसनो उपन्यास 'बहिना' आ 'भगजोगनी) (दुनो के लेखक : अंगद मिश्र 'राकेश' : प्रकाशन-काल क्रमशः 1968, 1975ई॰) के चर्चा कइले बानीं जेकर भाषा खाँटी भोजपुरी ना हो के हिन्दी-भोजपुरी बा ।

डॉ॰ अरुण मोहन भारवि जे भोजपुरी उपन्यास पर पहिला शोधकर्त्ता बाड़न, के अनुसार- भोजपुरी उपन्यासन के दस गो वर्ग में बाँटल जा सकेला । जइसे-

1. सामाजिक उपन्यास- बिंदिया, सनेहिया भइल झाँवर, भगजोगनी, एगो सुबह एगो साँझि, सेमर के फूल ।
2. मनोवैज्ञानिक उपन्यास- मुट्ठी भर सुख, कवाछ ।
3. ऐतिहासिक-पौराणिक उपन्यास- परशुराम, धूमिल चुनरी, रावन उवाच ।

4. आदर्शवादी उपन्यास– सुन्नर काका, गाँव के माटी, ऊसर के फूल ।
5. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास– रहिमा बेटी, भोर मुसुकाइल ।
6. यथार्थवादी उपन्यास– डहकत पुरवइया ।
7. आंचलिक उपन्यास– फुलसुंघी, थरूहट के बबुआ आ बहुरिया ।
8. प्रगतिवादी-जनवादी उपन्यास– जिनगी के राह, करेजा के काँट, आग-भउर-राख ।
9. संस्मरणात्मक उपन्यास– घर टोला गाँव ।
10. दार्शनिक उपन्यास– जीअन साह ।

एक त ई वर्गीकरण बहुते पुरान बा आ एह में बाद के उपन्यासन के नाम नइखे, दोसर एह पर श्री रामनाथ पाण्डेय आ डॉ॰ विवेकी राय जइसन लोग के असहमति बा । जहाँ पाण्डेय जी के अनुसार 'घर टोला गाँव' आ 'रावन उवाच' दुनो संस्मरणात्मक उपन्यास ह, उहाँ डॉ॰ विवेकी राय के अनुसार 'ऊसर के फूल' एगो यथार्थवादी उपन्यास ह आ 'घर टोला गाँव' आंचलिक ।

बात चाहे जे होय, एने के मूल्यांकन में भोजपुरी उपन्यासन में जवन उपन्यास बार-बार चर्चा आ प्रशंसा में आइल ह, ऊ ह – 'भोर मुसुकाइल' (विक्रमा प्रसाद), 'फुलसुंघी' (पाण्डेय कपिल), 'महेन्दर मिसिर' (रामनाथ पाण्डेय) आ 'ग्रामदेवता' (रामदेव द्विवेदी) ।

एह आधार पर एह निष्कर्ष पर पहुँचल जा सकेला कि भोजपुरी उपन्यास आपन गँवई सामाजिकता, समस्या आ परिवेश छोड़ले नइखे । एने-ओने पँवड़ियो के ओकर ध्यान अपने क्षेत्र के चरित्र नायक पर आ टिकता । जइसे महेन्द्र मिश्र पर लिखल 'फुलसुंघी' आ 'महेन्दर मिसिर' आ हिन्दी में हाले प्रकाशित संजीव के लिखल भिखारी ठाकुर पर उपन्यास 'सूत्रधार' ।

तबहूँ आज के ज्वलंत समस्या के गहिर पड़ताल, क्षेत्रीयता से निकल के व्यापक कथानक आ जटिल चरित्र पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक चित्रण के दिसाईं ओकरा अबहीं बहुत मेहनत करे के पड़ी तबे विश्व साहित्य त दूर ऊ हिन्दी उपन्यासन के पाँत में बइठावल जा सकी ।

●

भोजपुरी नाटक : उद्भव आ विकास

'नाटक' शब्द 'नट्' धातु से बनल बा । 'नट्' में 'अच्' प्रत्यय जोड़ला से 'नट' शब्द बनेला जेकर अर्थ कौतुक करेवाला अथवा एगो जाति विशेष से बा । त मोटामोटी 'नट्' के कौतुक 'नाटक' ह । नाटक खातिर एगो अउर शब्द बहुधा प्रचलन में बा आ ऊ ह– 'अभिनय' । अभिनय के शब्दिक अर्थ होला– चार तरह से ले चलल । यानी जब हम केहू के नकल वाणी से, हाव-भाव से, पोशाक से आ मुखाकृति से करीला त हम अभिनय करीला ।

बाकी आधुनिक परिभाषा में– नाटक सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के ऊ रुप ह जे मुख्यत: कवनो संवाद मूलक आलेख के अभिनय के जरिये, दोसर रंग-शिल्पियन के मदत से कवनो मंच भा रंगमंच पर देखेवालन के सामने प्रस्तुत कइल जाला ।

नाटक के उत्पत्ति आदमी के उत्पत्ति का साथ ही मानल जादे सही होई । नाटक के भाषा में कहीं त धरती के मंच पर नाना उद्भिज के सिनयरी जब तइयार हो गइल त आदमी के भूमिका में कवनो जीव के भेजल गइल आ तबे से एगो लम्बा नाटक शुरु बा ।

हमरा कहनाम के एहू से बल मिली कि नाटक के आदत आदमी में जनमजात बा । अक्सर हमनीं का बातचीत में अपन हाथ-गोड़ चलावत रहीला । लड़िका अपना गुरुजन के नकल करत रहेलन स । हमनी अकेले में बड़बड़ात रहीला भा खुशी के पल में नाच उठीला । इहे वजह बा कि 'डॉ॰ पिशेले' आ 'स्टुअर्ट' लड़िकन के स्वाभाविक खेल में नाटक के उत्पत्ति मनले बाड़न । कुछ लोग नाच से एकर जनम मानेले आ हमरा बुझाता कि प्यार, घृणा, क्षोभ, डर, चिन्ता आ हर्ष आदि त आदमी के अंदर रहबे कइल, ऊ प्रकृति (जइसे- हवा के ना चलला से चुप्पी, पेड़-पौधा के झूमल देख के खुशी में इतरायेल, घटा के गरजला से खीस, बिजुरी के चमक से डेरायेल आदि) के देखा-देखी हरकत करे के सिखलक आ अनजाने में नाटक के जनम दे देलक ।

नाटक के लिखित प्रमाण का खोज में ऋग्वेद के कुछ सूक्त सबसे

पहिले हमार ध्यान अपना ओर खींचले जेकर हामी 'मैक्समूलर', ओल्डनबर्ग', 'विण्टर निट्ज' आ 'प्राध्यापक लेबी' जइसन विद्वानो लोग भरले बा । आगे बढ़ के माने के पड़ी कि एह दिशा में भरत के 'नाट्यशास्त्र' (ई॰ पू॰ तीसरी शताब्दी) दुनिया के खाली मंच पर भारत के पुरान नाटक परम्परा साबित करेला काफी बा ।

प्राचीन नाटक के नाच से फरका के ना देखल जा सके । देवता के खुश करे भा तांत्रिक परम्परा के साधना खातिर नाच समाज के अनुष्ठानिक अंग रहल बा । नाटक के एह तरह से नाच से सम्बन्ध लोकधर्मी नाट्य परम्परा के द्योतक बा ।

पश्चिम के विद्वानन के त मत बा कि यूरोप के करीब-करीब सब उन्नत देशन में नाटक के पहिला रुप मिस्टिक प्लेज (Mystic plays) के रुप में रहे । अनेक देशन में एह मिस्टिक प्लेज के रुप आ नाच में समानता पावल जाला ।

जदपि भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में लोकधर्मी नाटकन के बारे में स्पष्ट वर्णन नइखे तबहूं उत्पत्ति संबंधी जवन रुपक कथा शुरु में देल गइल बा, ऊ आदमी के कृषि-युग के सूचक बा । जबकि भारत आ निकटवर्ती देशन में अनेक घुमन्तु जाति बस गइल रहे आ जहाँ एक बेर बसगित हो जाला, उहाँ मनोरंजन के साधन अपने मने पैदा हो जाले । नाटक अइसने सहज रूप से उपजल सुने आ देखे के योजना ह जवन बाद में नियमबद्ध हो गइल । पहिले पूर्ण लोकमुखी बनावे खातिर सब वर्ग के सहयोग एकरा मिलल बाद में मत-वैभिन्यता स्वाभाविक रहे । फल ई भइल कि एह क्रम में लोकधर्मी आ शिष्ट भा साहित्यिक नाट्य परम्परा के विकास अलग-अलग स्वतंत्र रुप से भइल ।

जहाँ तक भोजपुरी नाटक के सवाल बा त एने ई भ्रम टूटल ह कि भोजपुरी हिन्दी के उपभाषा ह । बलुक रिस्ता बइठाएब त भोजपुरी हिन्दी के मउसी ठहरी । बाबू रघुवंश नारायण सिंह आ डॉ॰ जीतराम पाठक जइसन लोग त एकर उपस्थिति वेद के रिचन में खोजले बाड़न । नाटक होय के परमान वेद के काल में अनुमानित बा आ भरतमुनि के नाट्यशास्त्र तक आवत-आवत त एकरा महत्व, उपयोगिता आ तेज प्रभाव गुने एकरा साथे साजिशो शुरु हो गइला के बात लउकता ।

'दि इंडियन थियेटर' (1942 ई॰) के लेखक मि॰ ई॰ पी॰ हाराबिज एह प्रसंग में साफ कहत बाड़न कि– 'संस्कृत नाटक निस्संदेह प्राकृत नाटक के

सम्भ्रान्त लेखकन से दिशा-निर्देश लेके लिखल गइल, (पृ॰ 26) । हो सकत बा लेखक सम्भ्रान्त नाहियो रहल होखस आ भाषो प्राकृत ना होय, बाकी ई त निश्चित बा कि भरत आ संस्कृत नाटकन के बहुत पहिले से बोली में नाटकीय प्रदर्शन होत रहे । ई प्रदर्शन तब के लोकनाटके होइहेंस, जेकर संशोधित रुप संस्कृत, शिष्ट आ साहित्यिक नाटक ह ।

हमरा कहनाम के एहू से बल मिली कि एने आके स्व॰ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जवन उपरुपकन के खोज कइले बाड़न ऊ अधिका नृत्य नाटक बा । जादेतर के चरित्र गंदा, हंसी-मजाक वाला आ अधिकांश के भाषा बोली ह । इहाँ तकले कि अनेक में त भारतीय परम्परा के सरबबेयापी सूत्रधारो के पता नइखे । (साहित्य दर्पण रचना-काल : 14वीं शताब्दी ई॰) ।

हमरा पुरहर विश्वास बा कि भोजपुरी के आदिम नाट्य रुप इहँही कहूँ मिली, जवन भोजपुरी खातिर उपलब्धि होई ।

भोजपुरी प्रदेश के लोकधर्मी नाटक

भोजपुरी प्रदेशमें लोकप्रिय लोकधर्मी आ लोकनाटकन के एह धारा में बंगाल के जात्रा, बिहार आ उत्तर प्रदेश आ उड़ीसा के रासलीला, उत्तर प्रदेश आ बिहार के नौटंकी से लोग बखूबी परिचित बा । जो एह नाटकन के भोजपुरी में नाहियों गिनल जाय त धोबी नृत्य, गोंड़ नृत्य, नेटुआ नृत्य, जोगीड़ा, हरफरौरी (पानी ना बरसला पर गावल जायेवाला गीत आ कइल टोटका), डोमकछ (जलुआ) आ बिदेसिया त बिना संदेह भोजपुरी के लोकधर्मी नाटक कहइहनस । एकरा अलावे रामायण गावत खानी दू दल आ व्यक्ति में गेय संवाद आ एह क्रम में फरसा, तीर-धनुष, बाँसुरी आदि देखा के क्रमशः परशुराम, राम-लक्ष्मण आ कृष्ण आदि के हाव-भाव एह रामायण गायन के नाटक के नजदीक ले आवेला ।

आगे चल के कीतनिया भाई लोग के भक्ति के वशीभूत सरुप बनल एके रामलीला, रासलीला के लगे खींच लाई ।

तब भोजपुरी में लउकीहेंन भोजपुरी के शेक्सपीयर कहायेवाला भिखारी ठाकुर जेकरा कन 'रामविवाह' आ 'राधेश्याम बहार' के मंचन उनका कला के 15वीं शताब्दी के लोकनाटकन से जोड़ता । जो एह में 'बिदेसिया' आ 'ननद-भउजाई' नाटक जोड़ दीं त भिखारी के पहिले 1858 ई॰ का आस-पास मीरगंज (गोपालगंज) का लगे बसल सुन्दरी आ दुनिया बाई के गिरोह में

'सुन्दरी के गीत' नाम से अइसने नाटक के प्रदर्शन होत रहे । गुद्दर राय के स्वांग आ बक्सर-निवासी रामसकल पाठक 'द्विजराम' के 'सुन्दरी-बिलाप' भिखारी के पहिले के रचना हंवनस ।

संक्षेप में लोकगीतन (जँतसार आ पुरबी आदि) में परदेसी पिया के वियोग में नायिक के तड़प तबे से बिदेसिया के बीज रुप में होय के परमाण बा जब लिखित साहित्य अस्तित्व में ना आइल रहे ।

डॉ॰ परमेश्वरी लाल गुप्त के कहनाम आखियान करे लायक बा कि– "भिखारी ठाकुर के भोजपुरी सांस्कृतिक जीवन में प्रवेश करने के पूर्व इस क्षेत्र का रंगमंचीय स्वरुप क्या था, यह अपने-आप में शोध का विषय है । नेटुआ का नाच और जोगिड़ा के मूल में निश्चय ही कोई मूल परम्परा रही होगी । उसी को बीज रुप में ग्रहण कर बंगाल की यात्रा से प्रेरणा प्राप्त कर भिखारी ठाकुर ने रंगमंच को पुनरुज्जीवित किया है ।" (पुस्तक : 'जनकवि भिखारी ठाकुर'; लेखक : महेश्वर प्रसाद, प्रकाशक : भोजपुरी परिवार, पटना-3; भूमिका से 1)

तबो सारण जिला भोजपुरी क्षेत्र के तत्कालीन समसामयिक समस्यन- बेमेल शादी आ असमय विधवापन के त्रासदी ('बेटी बेंचवा', 'बिधवा-विलाप') नसाखोरी के दुष्परिणाम (कलयुग बहार), धार्मिक अंधविश्वास में ठगाएल (गंगास्नान), जायदाद खातिर बेटा आ भाई के बध (पुत्र-बध, भाई-विरोध), टूटत संयुक्त परिवार (भाई-विरोध), भोजपुरिया जवानन के मजबूरीवश शहर-पलायन आ उनका परिवार पर आइल विपत्ति (बहरा बहार, घिंचोर बहार) आदि लेके कथ्य के दिसाईं एकदम अद्यतन आ शिल्प के दिसाईं परम्परागत प्रयोग जवन भिखारी कइलन आ ओके व्यवसाय से जोड़त लोग में लोकप्रिय बनवलन ऊ भोजपुरी के पहिल दर्जन-भर के करीब समस्या मूलक आ सुधारवादी नाट्य उपलब्धि बा ।

शिष्ट भा साहित्यिक नाटक

आजादी के पहिले के नाटक-

आजादी के पहिले के लिखित भोजपुरी नाटकन में रविदत्त शुक्ल के 'देवाक्षर चरित' (1884 ई॰) आ 'जंगल में मंगल' (दोसरका महायुद्ध के लगभग) के नाम आवेला जेकर चर्चा डॉ॰ जॉर्ज ग्रियर्सन के 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' आ डॉ॰ उदयनारायण तिवारी के शोध-प्रबंध 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' में आइल बा । पं॰ गणेश चौबे के पुस्तक 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ

बरिस' में भोजपुरी के एकांकी 'सुदेसिया' के चर्चो बा जवन छांगुर त्रिपाठी 'जीवन' के लिखल 1940 में प्रकाशित भइल रहे । एह नाटक के मंचन 1942 ई॰ में भइल आ अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त कर लिआइल ।

'देवाक्षर चरित' देवनागरी के फारसी लिपि के तुलना में बेहतर बतावत हँसी प्रधान ह जवन तब बलिया के जनप्रिय कलक्टर डी॰ टी॰ रॉबर्टस के सामने रामलीला के अवसर पर खेलल गइल रहे ।

आखियान करे के बात बा कि ई अबतक के खोज में भोजपुरी के पहिला लिखित नाटक रहे आ 'सुदेशिया' पहिल एकांकी । दुनों स्वदेशीपन से ओत-प्रोत हथियार लेखा उद्देश्य के तहत प्रयोग भइल ।

तब भोजपुरी नाटक के दुनिया में अवतरित होत बाड़न महापंडित राहुल सांकृत्यायन जिनकर 1942 ई॰ के आस-पास लिखल आठ गो भोजपुरी के नाटक– 'नईकी दुनिया', 'ढुनमुन नेता', 'मेहरारुन के दुरदसा', 'जोंक', 'ई हमार लड़ाई ह', 'देश रक्षक', 'जपनिया राछछ' आ 'जरमनवा के हार निहचय' तत्कालीन राजनीति आ समाज-सुधार पर आधारित होय का चलते नुक्कड़ नाट्य नियन समाज से संवाद करत आ फौरी लाभ पहुँचावत एक बेर फेर भोजपुरीनाटक के महत्व, उपयोगिता आ प्रभाव प्रमाणित करता ।

आजादी के पहिले के आखरी नाटक आजमगढ़ जिला निवासी श्री गोरखनाथ चौबे के 'उल्टा जमाना' (प्रकाशक- सतयुग आश्रम, बहादुरगंज, शाहाबाद) बा । एकर भाषा पछिमी भोजपुरी लेहले बा । डॉ॰ उदयनारायण तिवारी एह नाटक पर टिप्पणी करत लिखले बाड़न कि एह में ऊ मिठास नइखे जवन राहुल जी के नाटकन में बा । उल्टे एकर विषयो राहुल जी के नाटक- 'मेहरारुन के दुरदसा' के विरोध में औरतन के जादे पढ़ावे-लिखावे से अलग खाली रामायण-गीता बाँचे भर रखल जरूरी बतावल बा ।

आजादी के बाद के नाटक-

आजादी के बाद हास्य-प्रधान रेडियो नाटक 'लोहासिंह' के शृंखला भोजपुरी के जवन मान बढ़वलस, धाक जमवलक आ देश में समय-समय पर घटत घटना लेके लोगन में सीख देवे के काम कइलक ऊ स्व॰ रामेश्वर सिंह काश्यप के भोजपुरी क्षेत्र में लोहा मनवा देलक । आजो लोहासिंह के भाषा आ चरित्र के आधार पर जहाँ-तहाँ रचना देखे के मिल जाले । ओतिए घरी एकरा प्रभाव में विमल कुमार 'विमलेश' आ डॉ॰ मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' के नाट्य रचना देखे में आइल ।

अबतक भोजपुरी नाटक के ई पातर धार दिनोंदिन चौड़ा होत आज विशाल नदी के रुप लेले बा । 1977 ई॰ तक छपल भोजपुरी नाट्य पुस्तकन के संख्या लगभग पचास रहे । (अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन, सीवान के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका में छपल एह पंक्तियन के लेखक के लेख 'भोजपुरी नाटक आ रंगमंच : स्थिति आ भविष्य' के अनुसार) । पं॰ गणेश चौबे के पुस्तक 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' : प्रकाशित-भोजपुरी अकादमी, पटना, 1983 के अनुसार ई लगभग सै तक पहुँच चुकल रहे । आ बाद के प्रकाशित नाट्य-पुस्तकन लेके एकर संख्या लगभग 150 छू रहल होई । एह में पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, मौलिक आ अनुवाद, पूर्णांक आ एकांकी आदि सब किसिम के नाटक सामिल बाड़नस । एकरा अलावहूँ विभिन्न पत्र-पत्रिकन में समय-समय पर प्रकाशित होयवाला आ आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रन से प्रसारित भोजपुरी नाटकन के लेखा-जोखा संभव नइखे हो पावल । अनुमान बा, अप्रकाशित आ अप्रसारित नाट्य-पाण्डुलिपियन के एगो बड़हन जखीरा भोजपुरी पाले होई ।

भोजपुरी नाटकन के ई लमहर संसार छान-मारल आसान नइखे । ओकर नामो गिनारवल ढेर जगह घेरी । एह से आगे हम एकांकी आ पूर्णांक दुनों के एके साथे समेटत अपना नजर में उल्लेखनीय कृति आ कृतिकार के चर्चे मात्र करत बानीं ।

त भोजपुरी के ए वर्तमान नाट्य साहित्य में सबसे अधिका पूर्णांक नाटक शाहाबाद के श्री श्रीनिवास मिश्र जी के बा आ अनुवाद के संख्या देखत अनुदित नाटकन खातिर शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी के नाम लिआई । स्वगत छाया नाट्य 'परिछाहीं' आ लइकन खातिर नाटक 'तमाचा' लिख के अलग तरह के काम कइला खातिर तिसरका नाम ह डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' । एने नाटक के क्षेत्र में सर्वाधिक सक्रिय श्री सुरेश काँटक के लगभग आधा दर्जन नाटक उनका के ऊपर के दुनों लेखकन के नजदीक ले आई ।

बाकी भोजपुरी नाटकन पर जो कथ्य आ शिल्प के दिसाईं दोसरा उन्नत भाषाअन के अद्यतन चर्चित नाटकन के संदर्भ में विचार कइल जाव त बहुत खुश होय के बात नइखे । अधिका नाटक कथित शिष्ट परम्परा में प्रसाद आ ओही के आस-पास लिखल नाटकन के देखा-देखी मनोरंजन, समस्या के मोट पकड़ आ हृदय-परिवर्तन भा सुधार के सतही समाधान लेले लिखाइल बा । ऊहे कइक गो अंक आ हरेक अंक में कइक गो दृश्य, अलग-अलग सीन, पर्दा उठाओ-पर्दा गिराओ के झंझट अलग । जबकि आज के नाटक एह ताम-झाम

आ तूल से आगे बढ़ चुकल बा । ऊ वैज्ञानिक आविष्कार प्रकाश आ ध्वनि-यंत्र के सहायता ले रहल बा । एह व्यस्त जीवन में एके सेट पर लगभग तीन घंटा चल के गीत-संगीत का साथे सिनेमा नियर समाप्त होता । फेर भोजपुरी के आपन निजी संस्कार बा जवना के छोड़ के दोसरा के नकल में नाटक लिखला से एकर पहिचान धूमिल होई ।

हमरा राय में मंचन आ प्रस्तुतीकरण के दिसाईं एह क्रम में भिखारी ठाकुर के नाटकन के बाद अनेक कीतर्निया नाटक होत रामवचन यादव 'अँजोर' के गीति-नाट्य, गणेश तिवारी प्रशान्त के 'तोहरे पर हमरो गुमान' आ अविनाश चन्द्र विद्यार्थी के 'लीला ई श्रीराम-श्याम के', भगवतशरण सिंह के लिखल आ जन सम्पर्क बिहार द्वारा मंचित नाटक 'सोना', दानापुर नाट्य परिषद् के प्रस्तुति 'महेश' आ 'परवाना' प्रि॰ मनोरंजन प्रसाद सिंह के लिखल एकांकी 'किताबन में एगो दुनिया बसल बा', मधुकर सिंह के 'तीन घसियारा' आ कन्हैया प्रसाद सिंह 'सदय' के 'आनन्द' हमरा जानकारी में बा । अइसहीं ईप्टा द्वारा नुक्कड़ शैली में रुपान्तरित भिखारी के पोढ़ नाटक 'गबरघिंचोर' आ ध्वनि-प्रकाश का सहायता से आधुनिक मंच-टेक्नीक से प्रस्तुत संजय उपाध्याय के निर्देशन में मंचित भिखारी के 'बिदेसिया' कई असहमतियन के बादो अपना ओर ध्यान खींची । बिदेसिया शैली कहके हृषिकेश सुलभ के 'अमली' आ 'माटी गाड़ी' एही क्रम में उल्लेखनीय बा ।

कथ्य आ शिल्प लेके कुछ नया प्रयोग के चर्चा में डॉ॰ वसन्त कुमार लिखित भान शैली के एकल नाटक- 'अकसरुआ', मनोरंजन से भरपूर होइयो के जनसंख्या वृद्धि आ दहेज प्रथा पर अंगुरी उठावत रामनारायण उपाध्याय के लिखल आ 'रंगश्री' बोकारो के प्रस्तुति 'बिरजू के बिआह', छोट-बड़ जात के गँवई समस्या के रेघियावत एके दृश्य में लिखल केदारनाथ पाण्डेय के पूर्णांक नाटक 'शुरुआत' आ आधुनिक मनोविज्ञान के धरातल पर लिखल डॉ॰ तैयब हुसैन 'पीड़ित' के 'आपन-आपन डर' (प्रकाशित : इन्टरमीडिएट भाषा-साहित्य के पाठ्यक्रम में, भोजपुरी अकादमी पटना से) आदि आई । निश्चित रुप से अइसन कृति आपन पहचान जोगावत नाटक के क्षेत्र होत अद्यतन प्रयोग का ओर डेग बढ़ा रहल बाड़ी । काहेंकि नाट्य विधा पले एगो विशाल संभावना बा । भोजपुरी नाटक एकर अपवाद ना हो सके । फेर आज के नाटक विचार में ऐब्सर्ड आ प्रस्तुतिकरण में नुक्कड़ जइसन बिन्दुअन पर पहुँच गइल बा ।

आ आज हिन्दी रंगमंच का आगे ई बहस के मुद्दा बा कि नाटक के शिल्प (प्रस्तुतीकरण के तरीका) का राखल जाव? का शहरी आ शिष्ट लोगन

के समझ आ बड़हन संख्या में गाँवन के लोग के समझ एके बा? उत्तर बा-ना । एके शिल्प आ कथ्य दुनों जगहा कारगर सिद्ध ना होई । हिन्दी नाटकन में नौटंकी शैली में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'बकरी' आ छतीसगढ़ शैली में हबीब तनवीर के 'आगरा बाजार', 'चरणदास चोर', 'बहादुर कलारिन' के लोकप्रियता एकर उदाहरण बा ।

भोजपुरी में ना त कुशल लेखकन के कमी बा, ना नाटक के निर्देशन आ मंचन के समझदारी राखेवालन के । हँ, भोजपुरी संगठनन आ संस्थन के एह पर गंभीरता से विचार करे के चाहीं । बंगला आ मराठी भाषाअन के अपन रंगमंच बा । चित्रकला का क्षेत्र में पड़ोसी मैथिली भाषा के 'मधुबनी पेंटिंग' संसार के सीमा छूअता, अइसन में तत्काल भोजपुरियो के आपन पहचान लेले 'भोजपुरी रंगमंच' होय के चाहीं । भोजपुरी में बहुधा बड़े लोग के जूठन आ समझदारी पर लइकनो के निर्भर रहे के पड़ता । टी॰ वी॰ घर में घूस के अपना ढंग से आपन काम अंजाम दे रहल बा । अइसन में भोजपुरी कन गड्मड् स्थिति राखल ठीक ना होई ।

आखिर में एह परिप्रेक्ष्य में जो भोजपुरी के लोकनाट्य शैली पर ध्यान देवल जाय त पाएब कि उहाँ ओपेन थियेटर के कल्पना पहिलहीं से मौजूद बा । पात्र तथाकथित मंच पर सब परिधान-परिवर्तन आ मेकअप पूरा कर लेलन । दृश्य में ताम-झाम या त हइये नइखे या संकेत-मात्र बा आ दर्शक से जुड़े के बात त इहाँ तक बा कि बिदेसिया शैली के नाटकन में दर्शक पात्रन के टोकत रहेलन आ पात्रो अपना काम के दौरान दर्शकन के समेटत चलेलन । मनोविज्ञान त अइसन काम करेला कि भिखारी के 'भाई-बिरोध' नाटक में नायक भरल महफिल में एगो छोट लाठी के सहारे जब हर चलावे के स्वांग भरेला त किसान लउके लागेला आ उहे लाठी बनूक नियन तानेला त खुद शिकारी आ सामने जंगल देखाई देवे लागेला ।

40 प्रतिशत साक्षर लोगन के 80 प्रतिशत गाँवन के एह देश में भोजपुरी के ई पारंपरिक आ परिचित शिल्प कवनो संदेश खातिर आजो सामयिक आ प्रासंगिक बा आ अउर बड़हन उपयोगिता खातिर व्यावसायिक लोक कलाकारन से अलग पढ़ल-लिखल समझदार कलाकारन का ओर अकूत संभावना लेले ताकता ।

●

भोजपुरी निबंध : उद्भव आ विकास

मौखिक परम्परा में छन्द में कइल गेय रचना जादे कारगर सिद्ध भइल होई, काहें कि तब लिखे-पढ़े के कवनो साधन सामने ना रहे । इयादे के सहारे रचना के सुरक्षित राखे आ दोसरा के देवे के काम होत रहे । बाकी कविता भा गीत में आपन बात कहे के एगो सीमा रहे । सब गूढ़ बात कविता में ना कहल जा सकत रहे । एने आदमी जइसे-जइसे सभ्य भइल जात रहे, वइसे-वइसे जिनगी जटिल भइल जात रहे आ तब ओकर अनुभवो इकहरा ना रह गइल रहे । एह से जब कथ्य प्रधान भइल तब शिल्प में सुभावत: बदलाव आ गइल होई । छन्द के लय टूट गइल होई भा खास भाव-विकार खातिर सीमित मान लेहल गइल होई ।

शब्द 'निबंध' में भी अइसने कुछ इतिहास छिपल बा । काहें कि एकर शाब्दिक अर्थ होला– बन्हायेल, सीअल, सँवारल भा सँजो के राखल । असल में जब आदमी भोजपत्र पर, पेड़ के छाल भा जानवरन के खाल पर लिखल शुरु कइल त ओह लिखल के सुरक्षित राखलो लिखला का साथ ही महत्वपूर्ण रहे । शब्द 'निबंध' एही अर्थ में बनल बाकी आज रचना, अभिव्यक्ति भा भाव बन्हाये का अर्थ में रूढ़ हो गइल बा ।

'साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में निबंध के जवन परिभाषा देहल गइल बा, ओकरा अनुसार- 'निबंध औसत लम्बाई के प्राय: गद्य में कइल अइसन रचना ह, जेह में कवनो विषय भा वस्तु पर सरल भाषा में विचार कइल गइल होखे आ ऊ विचार ओही रूप में होय जइसे विषय भा वस्तु लेखक के प्रभावित कइले होखे ।'

एही से पछिमी देशन में निबंध खातिर अंग्रेजी में Personal Essay शब्द प्रचलन में बा । एह 'पर्सनल एस्से' के मराठी भाषा ललित निबंध कह के अपनवलक बाकी हिन्दी में 'ललित निबंध' एगो खास तरेह के रोचक निबंध खातिर रुढ़ हो गइल । भोजपुरी एह बारे में हिन्दीए के नकल करत आइल बा ।

अपना कन गद्य कवियन के कसौटी कहल जाला आ ओहू में निबंध गद्य के कसौटी मानल गइल बा ।

निबंध पर एह भूमिका के बाद जो भोजपुरी निबंध के खोज में चलल जाय त सबसे पहिले सन् 1948 में आचार्य महेन्द्र शास्त्री का सम्पादन में निकलल द्विमासिक पत्रिका 'भोजपुरी' का ओर धेयान जाई जेह में सम्पादक का कलम से 'पानी' पर एगो निबंध लिखाइल बा । शास्त्री जी के 'भोजपुरी' त एके अंक निकलल बाकी बाबू रघुवंश नारायण सिंह जब एही नाम से मासिक 'भोजपुरी' निकाले लगलन त एह में कविता, कहानी का साथे निबंधो निकले लागल । 1960 में पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय का सम्पादन में तिमाही 'अँजोर' शुरु भइल जवन 1979 तक अपना में बराबर हर विधा में लिखवावत रहल । आगे चल के डॉ॰ जीतराम पाठक के 'भोजपुरी साहित्य', भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' के 'गाँव-घर', आचार्य प्रतापादित्य के 'भोजपुरी वार्ता' आ राजबली पाण्डेय के 'पुरवइया' से एह विधा के प्रोत्साहन मिलल ।

बनारस से निकलेवाला हिन्दी के दैनिक पत्र 'आज' में जवन 'चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ' लगभग 14-15 के संख्या में प्रकाशित भइल, ओह में गँवई जिनगी के एतना रुचिगर चित्र उरेहल गइल रहे कि ऊ खूब सराहल गइल आ एह से भोजपुरी निबंध के बल मिलल । डॉ॰ विवेकी राय - पुस्तक : 'बात क बात' के भूमिका में एकर चर्चा करत कहले बाड़न कि 'उन निबंधों ने अपनी जो गहरी छाप छोड़ी है वह वास्तव में आधुनिक भोजपुरी गद्य का गौरव है ।'

अबतक भोजपुरी निबंध के सोत फूट चुकल रहे । 1957-58 में चतुरी चाचा के एह चिट्ठियन के संग्रह दू भाग में किताब बन के आइयो गइल रहे । देखा-देखी एह विधा का ओर भोजपुरी लेखक प्रवृत्त भइलन आ 1962 ई॰ में जमशेदपुर भोजपुरी परिषद् से चन्द्रभूषण सिन्हा का सम्पादन में 'भोजपुरी संगम' नाम से एगो भोजपुरी गद्य-पद्य संग्रह आइल जेह में तीन गो निबंध प्रकाशित रहे । फेर त 1964 में डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के तेइस गो रेखाचित्र के संग्रह 'सुरतिया ना बिसरे', डॉ॰ सत्यदेव ओझा का सम्पादन में तेरह गो लेखकन के यात्रा-संस्मरणात्मक निबंध 'फोकट में सैर' आइल आ एही साल कलकत्ता से 'भोजपुरी संकलन' नाँव से प्रकाशित किताब में दू गो निबंध- 'सावन हे सखि परम सुहावन' आ 'आजादी के मोल' देखे में आइल । 1966 में राधामोहन 'राधेश' का सम्पादन में 'जीरादेई से सदाकत

आश्रम तक' जवन पुस्तक निकलल ओकरा गद्य खण्ड में विभिन्न साहित्यकारन के लिखल सोरह गो निबंध रहे ।

बाकी एह विधा का क्षेत्र में सबसे जादे सोहरत मिलल- भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित डॉ॰ विवेकी राय के लिखल एकइस गो ललित निबंध-संग्रह 'के कहल चुनरी रंगा ल' के । पंडित गणेश चौबे अपना किताब 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' में एके भोजपुरी के पहिल ललित निबंध के संग्रह मनले बाड़न ।

निबंध लिखे आ छपवावे के जइसे होड़ लाग गइल । डॉ॰ बच्चन पाठक सलिल का सम्पादन में 1969 में सतरह गो निबंधन के संग्रह 'लहालोट' आइल । एह में स्थापित निबंधकार सर्वश्री दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ', पं॰ गणेश चौबे, डॉ॰ विवेकी राय, डॉ॰ सत्यदेव ओझा, डॉ॰ स्वर्णकिरण, डॉ॰ सलिल, डॉ॰ निर्भीक, डॉ॰ रामसेवक 'विकल' आ परमेश्वर दूबे शाहाबादी के एक साथ निबंध पढ़े के सुयोग मिलल । एह में आठ गो निबंध भोजपुरी भाषा-साहित्य पर लिखाइल रहे बाकी दोसरा-दोसरा विषयन पर । अइसहीं एही साल श्री राधामोहन 'राधेश' के सम्पादन में प्रकाशित 'गाँधी गाथा' के गद्य खण्ड में विभिन्न निबंधकारन के बारह गो निबंध निकलल ।

अब आचार्य महेन्द्र शास्त्री के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर दूगो पुस्तक प्रकाशित भइल 1971 आ 1976 में । पहिला के सम्पादन पाण्डेय कपिल जी कइलीं आ दोसरा के रासबिहारी पाण्डेय । दुनों में शास्त्री जी के विभिन्न पक्ष पर विभिन्न लोगन के कलम के अवदान निबंध-रुप में बरकरार बा ।

1977 एह से इयाद करे लायक बा कि एह साल सबसे जादे, आधा दर्जन से अधिक एकल निबंध-संग्रह सामने आइल आ संयुक्त सम्पादन में कइक गो महत्वपूर्ण निबंधन के संग्रहो निकलल । जइसे- 'भोजपुरी : कुछ समस्या आ समाधान' (पं॰ गणेश चौबे), 'अङ्गऊ' (अक्षयवर दीक्षित), 'बात क बात' (कुलदीप नारायण 'झड़प', 'कलमिया नाहीं बस में' (सत्यवादी छपरहिया), 'मन के मौज' (विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव), 'जीवनगीति' (हरिशंकर वर्मा), 'रेखा पर रेखा' (डॉ॰ लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी) आ डॉ॰ विवेकी राय, श्री सिपाही सिंह 'श्रीमन्त' के संयुक्त सम्पादन में : 'भोजपुरी निबंध निकुंज', डॉ॰ जीतराम पाठक-प्रो॰ शालिग्राम उपाध्याय आ डॉ॰ अनिल कुमार राय 'आंजनेय' के संयुक्त सम्पादन में 'ललित निबंधावली' आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन, सीवान का अवसर पर प्रकाशित स्मारिका के स्तरीय निबंध आदि ।

कहे के ना होई कि अब तक भाषिक, सैद्धान्तिक, वैचारिक, अनुसंधानात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक, समीक्षात्मक, संस्मरणात्मक, ललित आदि सब तरेह के निबंध भोजपुरी में आ चुकल रहे आ ईहो पता चल चुकल रहे कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ॰ उदय नारायण तिवारी, डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, पं॰ गणेश चौबे, ईश्वर चन्द्र सिन्हा, डॉ॰ विजय बलियाटिक, डॉ॰ कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', डॉ॰ सत्यदेव ओझा, श्री संतकुमार वर्मा, श्री अक्षयवर दीक्षित, कुलदीप नारायण राय 'झड़प', पाण्डेय जगन्नाथ, पाण्डेय कपिल, प्रो॰ रामेश्वर नाथ तिवारी, डॉ॰ जीतराम पाठक, प्रो॰ रामेश्वर सिंह काश्यप, डॉ॰ मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध', श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव जइसन निबंधकार एह विधा में भोजपुरी के भंडार भरेला सक्रिय बाड़न ।

1978 में महेश्वराचार्य के 'बतकूचन' आइल, श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के 'नवरंग' । 1982 में डॉ॰ उमाशंकर सिंह 'उषाकर' के 'कलम के निशान' आइल, 1983 में प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' के 'जीअल सीखीं' आ रामनगीना सिंह विकल के 'नव निबंध'; 1986 में शुकदेव सिंह 'स्नेही' के 'पंचमेवा' आइल, 1987 में अविनाशचन्द्र विद्यार्थी के 'घर के गुर' ।

भोजपुरी के निबंध विधा पोढ़ हो चुकल रहे । हर तरेह के लेखक, हर विषय पर हर तरेह के निबंध । गंभीर विषयन से गुदगुदावे वाला तक । अब जरुरत रहे छूटल-फटकल विषय छूए के । साइत एही नजरिया से 1988 में अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के पिछला दस अध्यक्ष लोग के भाषण के संग्रह 'दसरतन' प्रकाशित भइल । हरिशंकर वर्मा आपन 'आखरी गीत' लिखलन । ओकरा बाद 1989 में उनका पर 'हरिशंकर वर्मा स्मृति ग्रंथ' आइल । आंजनेय के 'विचार बंध', 'भोजपुरी संस्कृति आ दोसर निबंध' नाँव से 1990 में डॉ॰ स्वर्णकिरण के निबंध आ 1991 में अक्षयवर दीक्षित के महत्वपूर्ण किताब 'भोजपुरी निबंध' आइल, फेर उनके 'भोजपुरी के सपूत', 'भोजपुरी सेवी महिला' । महिलो लेखिका में एह विधा में डॉ॰ आशारानी लाल के 'ए बचवा फूलऽ फरऽ' आ 'माई' आ चुकल बा ।

1992 में डॉ॰ विवेकी राय 'गंगा-यमुना-सरस्वती' देलन, 1993 में श्रीमती राजेश्वरी शांडिल्य के भिन्न-भिन्न निबंध आइल । दुगो अउर पुस्तक के चर्चा बिना साइत एह निबंध साथे न्याय ना होई । ऊ ह डॉ॰ अशोक द्विवेदी के 'रामजी के सुगना' आ श्री अक्षयवर दीक्षित-डॉ॰ तैयब हुसैन 'पीड़ित' के संयुक्त सम्पादन में निकलल निबंध-संग्रह 'डुमरी कतेक दूर' । दुनों

के प्रकाशन 1994 के आस-पास के ह ।

एह तरेह से ना खाली 'भोजपुरी लोक', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका', 'भोजपुरी माटी', 'कोइल', 'बिगुल', 'जगरम', 'इंगुर', 'कलँगी', 'लहार' आदि पत्रिका एह विधा के प्रगति में योगदान कइलिन सऽ; बलुक आज 'भोजुपरी विकास', 'चेतना', 'खोंइछा', 'पनघट', 'निर्भीक विचार', 'पाती', 'महाभोजपुर', 'भोजपुरी विश्व', 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आदि पत्रिका एके आउर आगे बढ़ावता ।

एक तरफ आपन विशिष्टता लेले 'कविता', 'विभोर', 'भोजपुरी कथा-कहानी' आदि पत्रिका क्रमश कविता, नाटक आ कहानी से संबंधित निबंध लिखवा रहल बा त दोसरा तरफ अपना-अपना शैली आ सोच के विशेषता लेले भोजपुरी-निबंध में प्रो॰ हरिकिशोर पाण्डेय, रामनाथ पाण्डेय, प्रो॰ बच्चू पाण्डेय, डॉ॰ शंभूशरण, डॉ॰ शिववंश पाण्डेय, डॉ॰ आद्या प्रसाद द्विवेदी, डॉ॰ अशोक द्विवेदी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ॰ रामाशीष प्रसाद, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, कन्हैया सिंह 'सदय', वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, वैद्यनाथ 'विभाकर', तैयब हुसैन 'पीड़ित', देव, कुमार वीरेन्द्र, सुभद्रा वीरेन्द्र, जीतेन्द्र वर्मा आदि के कलम एकरा विकास के अउर आशा जगावता ।

●

भोजपुरी में पत्र-पत्रिका

भोजपुरी-पत्र-पत्रिका के इतिहास बहुत पुरान बा, जदपि ई बहुत दिन ले भोजपुरी आंदोलन के रुप ना ले सकल । शुरु में भोजपुरी का सामने लिपि के समस्या रहे कि एकर लिपि 'कैथी लिपि' होई कि 'देवनागरी' । ओकरा बाद एकर विकास चाहेवाला लोगो हिन्दी के अहित जान के एह दिसाईं आगे बढ़े से कतराए । जे लिखवइया रहे ऊ या त हिन्दी में जमल रहे या हिन्दी-भोजपुरी दूनों में लिखत रहे । अइसनो में धर्म-संकट ई रहे कि केकरा के छोड़ल जाव, केकरा के बढ़ावल जाव? अइसन मे शुरुआत में त कुछ हिन्दी पत्र-पत्रिका भोजपुरी रचना के स्थान देवे लगलनस । एह में बनारस से छपेवाला 'दैनिक आज' के नाम आदर के साथ लिआई । आखियान करे के बात बा कि एह में भावना ई रहे कि भोजपुरियो एक तरह के हिन्दीए ह अथवा जादे-से-जादे हिन्दी के एगो उपभाषा । एह से हिन्दी कवि सम्मेलनों में वाह-वाही आ प्रशंसा पाइयो के भोजपुरी आपन अलग अस्तित्व बहुत दिन ले ना बना सकल ।

अइसन में 1915 ई॰ में बक्सर से एगो पखवारा भोजपुरी पत्र कैथी लिपि में निकलल - 'बगसर समाचार' जेकर सम्पादक रहीं- बिहार में भोजपुरी क्षेत्र के स्वनामधन्य नेता बाबू जयप्रकाश नारायण । इनका के लोग 'बगसर के गाँधी' कहे । स्थानीय इसकूल में मास्टरी कइला से ऊ 'मास्टर साहेब' के नाँवों से मसहूर रहस । ई पत्रिका पहिले हाथ से लिख के बँटायेल जेह में हिन्दी के आधा लेख आ आधा भोजपुरी के लोककथा आ गीत वगैरह रहे । बाबू शिवन्दन सहाय के कहला पर एकर लिपि बदल के देवनागरी कर दिआइल । ई पत्रिका 1917-18 ई॰ तक चलल, फेर मास्टर साहेब के स्वराज-आन्दोलन में भाग लिहला खातिर सजाय हो गइल आ ई बन्द हो गइल ।

'बगसर समाचार' त बन्द हो गइल बाकी भोजपुरी पत्रकारिता के नींव दे गइल । भोजपुरी लेखकन के प्रोत्साहन मिलल आ 1925 में श्री रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' के भोजपुरी कविता हिन्दी के 'हिन्दूपंच' (कलकत्ता) 'आज' (बनारस) आदि में छपे लगली सऽ ।

सन् 1947 में कलकत्ता से अखौरी महेन्द्र कुमार वर्मा 'भोजपुरी' नाँव

से एगो पत्र हिन्दी-भोजपुरी में मिलल-जुलल निकलले बाकी बाद में ऊ कलकत्ता छोड़ के वकालत करे पटना आ गइले आ इहँहीं उनकरा स्वर्गवास का साथ ही पत्रिको के लीला समाप्त हो गइल । (लेख: 'भोजपुरी आन्दोलन आ पत्र-पत्रिका', लेखक- पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय; प्रकाशित- अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन, सीवान के स्मारिका में ।)

1948 में स्व॰ महेन्द्र शास्त्री पटना से 'भोजपुरी' नाँव से जवन पत्र निकललन, अधिका लोग इहँहीं से भोजपुरी पत्रिका के सही माने में शुरुआत मानेलन । एह में नाम बदल-बदल के शास्त्री जी के कईक गो रचना त छपले रहे, महापंडित राहुल सांकृत्यायन आ प्रि॰ मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के भी लेख रहे । विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त के भोजपुरी कहानी - 'केहू से मत कहेब' खातिर भी ई अंक जानल जाला । अंक एके गो निकल के रह गइल ।

तब एही नाम 'भोजपुरी' से बाबू रघुवंश नारायण सिंह आरा से मासिक रुप में एकर शुरुआत 1952 ई॰ में कइलन जवन बाद में पटना आके रुक-रुक के 1973 तक निकलत रहल । भोजपुरी के बड़-बड़ विद्वान लोग के एकरा सहयोग मिलल आ ई भोजपुरी के महत्वपूर्ण सेवा कइलक ।

1954 में 'आगमन' नाम से एगो मासिक पत्र हिन्दी-भोजपुरी में सीवान से शुरु भइल रहे जेकर सम्पादक आ प्रबन्धक क्रमश: श्री संत कुमार वर्मा आ अक्षयवर दीक्षित रहीं ।

तब भोजपुरी-पत्र का दुनिया में 1959 से 'अँजोर' के प्रकाशन एगो फेर महत्वपूर्ण घटना मानल जाई । एह पत्र के सम्पादक त रहीं पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय बाकी एकरा अचार्य शिवपूजन सहाय के भी आशीर्वाद प्राप्त रहे । बहुत दिन ले 'अँजोर' निकल के भोजपुरी में शोधात्मक आ स्तरीय लेखन के आगे बढ़ावे के काम कइलक । 20वाँ बरिस पूरा क के ई पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के निधन के बाद बन्द हो गइल । कहीलै- रुस, पेन्सिलवेनिया, अमेरिका, जर्मनी, आस्ट्रेलिया आदि से शोधी विद्वान एह पत्रिका के सम्पर्क में आइल आ मदद पावल । एह में 'बायन' स्तंभ से दोसरो लोकभाषा के रचना छपे ।

अब भोजपुरी पत्रिका के एगो सिलसिला शुरु हो गइल रहे । फल ई भइल कि 1960 में आरा से भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' के सम्पादन में 'गाँव-घर'; 1964 में पटना से जयदारी का सम्पादन में 'भोजपुरी समाचार' (साप्ताहिक); 1964 में आचार्य प्रतापादित्य का सम्पादन में गोरखपुर से 'भोजपुरी वार्ता' (पाक्षिक), 1966 में ईहे पत्र मोतिहारी से साप्ताहिक, 1966 में पटना से अर्द्धसाप्ताहिक आ तब दैनिक निकले लागल, अर्द्धसाप्ताहिक आ

दैनिक के सम्पादक रहीं आचार्य विद्यार्थी ।

भोजपुरी में विधा विशेष कहानी पर केन्द्रित होके डॉ॰ स्वामीनाथ सिंह आ प्रो॰ राजबली पाण्डेय के सम्पादन में भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी से जवन 'भोजपुरी कहानियाँ (मासिक) निकलल, ई 1964 से शुरु होके 1977 तक कहानी विधा के आकाशे ठेका देलक । एकर लोकप्रियता के रेकार्ड रहे कि ई तीन हजार हर महीना में छप के हिन्दी पत्रिका नियर रेलवे के बुक स्टॉल पर बिक जाय । ई भोजपुरी के कहानिकार पैदा करे में भी अहम भूमिका निभवलक ।

भोजपुरी-पत्र-पत्रिका के ई काफला फेर आगे बढ़ल आ छपरा से 1964 में सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' आदि का सम्पादन में 'माटी के बोली' (मासिक) निकलल, आरा से 1964 में डॉ॰ जीतराम पाठक का सम्पादन में 'भोजपुरी साहित्य' (मासिक), इलाहाबाद से 1965 में ब्रजेन्द्र भारती का सम्पादन में 'हमार बोल' (मासिक), 1965 में जमशेदपुर से डॉ॰ बच्चन पाठक 'सलिल' का सम्पादन में 'लुकार' (अनियतकालीन), 1968 में वाराणसी से रामबली पाण्डेय का सम्पादन में 'पुरवइया' (त्रैमासिक), 1968 में सर्वानन्द का सम्पादन में 'भोजपुरी जनपद', 1969 में इहँही से विनोदचन्द्र सिन्हा का सम्पादन में 'काशिका' (पाक्षिक), 1969 में छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश) से भोलानाथ सिंह के सम्पादन में 'भोजपुरी समाज' (मासिक), आरा से एही साल रामनाथ पाठक प्रणयी का सम्पादन में 'हिलोर' (मासिक), छपरा से राधेश का सम्पादन में 'पहरुआ' (साप्ताहिक) ।

एही तरेह 'भोजपुरी टाइम्स' (समाचार साप्ताहिक, संपादक- ब्रह्मानन्द मिश्र, पटना, 1971); 'टटका' (पाक्षिक, संपादक रमाशंकर पाण्डेय, 1972, आरा); 'ललकार' (मासिक, बच्चन पाठक सलिल, जमशेदपुर, 1972); 'सनेस' (त्रैमासिक, दीपनारायण मिश्र आ रामचन्द्र गुप्त, नेपाल 1972); 'अँजोरिया' (द्विमासिक, राममूर्ति पराग आ चन्द्रकान्ता, हुगली, 1972); 'माटी के गमक' (तिमाही, फेर मासिक, विमल कुमार सिंह 'विमलेश', सीवान, 1973); 'चटक' (पखवारा, चितरंजन, आरा, 1976); 'भिनसार' (मासिक, रवीन्द्र कुमार वर्मा, पं॰ बंगाल, 1974); 'लोग' बाद में 'भोजपुरी उचार' (मासिक, पाण्डेय कपिल-नागेन्द्र प्रसाद सिंह, पटना, 1975); 'भोजपुरी कलम' (मासिक, पशुपति नाथ सिंह, पटना); 'गोहार' (तिमाही, राकेश कुमार सिंह, भोजपुर, 1975); 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' (डॉ॰ वसन्त कुमार, पटना, 1976); 'उरेह' (पाण्डेय कपिल, पटना, 1976); 'अहेरी' (अवधेश नारायण

शाही आ शंभूशरण राम, मुजफ्फरपुर, 1976); 'भोजपुरी संसार' (मासिक, माध व पाण्डेय निर्मल, जमशेदपुर, 1977); 'भोजपुरी समाचार' (मासिक, हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', पटना, 1977); 'कलश' (प्रणयी, आरा, 1977); 'भोजपुरी मिलाप' (तिमाही, ऋषिदेव दूबे-अनिल ओझा 'नीरद', कलकत्ता, 1977); 'मोजर' (तिमाही, ब्रजकिशोर दीक्षित, सीवान, 1977); 'भोजपुरी माटी' (कृष्णबिहारी मिश्र, कलकत्ता, 1980); 'डहर' (रजनीकान्त 'राकेश', मोतिहारी, 1977); 'डेग' (तैयब हुसैन पीड़ित, पटना, 1977); 'चोट' (शशिभूषण लाल, इलाहाबाद, 1977); 'भोजपुरी कथा-कहानी' (मासिक, प्रो॰ ब्रजकिशोर, पटना, 1978) 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' (मासिक, सहृदय, पटना, 1977); 'सनेहिया' (त्रैमासिक, राकेश कुमार सिंह, लखनऊ, 1978); 'पपिहरा' (वैद्यनाथ 'विभाकर', सारन, 1978); 'लालमाटी' (पाक्षिक, गौरीकान्त कमल, गोपालगंज, 1979); 'पाती' (त्रैमासिक, डॉ॰ अशोक द्विवेदी, बलिया, 1979); 'भोजपुरी के गमक' (पाक्षिक, बाल्मीकि विमल, मुजफ्फरपुर, 1980); 'आपन गाँव' (मासिक, महेन्द्र गोस्वामी, भोजपुर, 1980); 'जोखिम' (त्रैमासिक, साँवलिया विकल, मोतिहारी, 1980); 'साखी' (वार्षिक, परमेश्वर दूबे शाहाबादी, जमशेदपुर, 1980); 'झकोर' (मासिक, डॉ॰ धीरेन्द्र बहादुर चाँद, छपरा, 1981); 'कचनार' (मासिक, श्रीवास्तव प्रदीप कुमार प्रभाकर, सीवान 1981); 'तरई' (मासिक, अरुण भोजपुरी, भोजपुर, 1981); 'चाक' (कहानी त्रैमासिक, रामनाथ पाण्डेय, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, छपरा, 1982); 'सोनहुला माटी' (त्रैमासिक, मैनावती श्रीवास्तव मैना, गोरखपुर, 1982); 'माई के बोली' (त्रैमासिक, नंदी दूबे, रोहतास, 1982); 'दियरी' (त्रैमासिक, महेश्वराचार्य, भोजपुर, 1982) आदि पत्रिकन के लहमहर कतार बा ।

ऊपर बिना कवनो भूमिका के भोजपुरी में प्रकाशित भइल पत्र-पत्रिकन के हम जवन सूची गिना अइनीहं, ऊ 'भोजपुरी प्रकाशन के सई बरिस' (संपादक- पं॰ गणेश चौबे, प्रकाशक- भोजपुरी अकादमी, पटना) के सहारे संभव हो पाइल ह । एह में खास बात ई बा कि एह में से जादेतर पत्रिका अल्पजीवी सिद्ध भइली स । बाकी एकर क्रम टूटल ना, एगो मरल त दोसर जनम लेत रहल आ अनियमित होके भी बहुत दिन ले भोजपुरी के सेवा कइलक । कुछ पत्रिका विधा विशेष पर केन्द्रित रहलनस, जइसे- कहानी पर 'भोजपुरी कहानियाँ', 'भोजपुरी कथा-कहानी', 'चाक' आदि । एह क्रम में पत्रिका के विशेषांको उल्लेखनीय रहलनस ।

कुछ से भोजपुरी भाषा-साहित्य आगे बढ़ल, ओकरा से मानक रुप में

सहायता मिलल । जइसे- 'भोजपुरी साहित्य', 'पुरवइया', 'लोग', 'उरेह', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' आदि । एह में से कुछ पत्रिका भोजपुरियो में प्रगतिशील धारा आ सोच के समावेश कइलक । जइसे-डगर, डेग, चोट आदि ।

आ जवन कुछ अउर पत्रिका निकलल, ओह में रहे- मुजफ्फरपुर से 'कोइल', सीवान से 'बिगुल', लखनऊ से 'भोजपुरी लोक', छपरा से 'होनहार (बाल मासिक), 'कसौटी' (पहिल भोजपुरी समीक्षा पत्र), 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका' आदि ।

आ जे कुछ नया पत्रिका आपन-आपन भूमिका भोजपुरी में आजकाल निभा रहल बा, ऊ पत्रिका हटे- 'भोजपुरी विकास चेतना' (बलिया), 'खोंइछा' (भोजपुर), 'पनघट' (हिन्दी-भोजपुरी, पटना), 'निर्भीक समाचार' (जमशेदपुर), 'कविता' (पटना), 'विभोर' (नई दिल्ली), 'भोजपुरी भारती' (ढोढ़स्थान, सारन) आ 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' (देवरिया, उ० प्र०) । एह में 'कविता' आ 'विभोर' त क्रमशः भोजपुरी काव्य आ नाट्य विधा पर केन्द्रित बा, 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' विश्व भोजपुरी सम्मेलन के मुखपत्र का रुप में लक-दक का साथे स्तरीय सामग्री परोस रहल बा । एकरा प्रयास से साहित्य अकादमी, दिल्ली अपना मुखपत्र (अंग्रेजी) के एगो अंक भोजपुरी साहित्य पर केन्द्रित कइलख आ भोजपुरी के रचना अंग्रेजी में अनुदित होके छपल ह फेर एह में के कहानी के उर्दू अकादमी, दिल्ली अपना पत्रिका में उर्दू में छपलखऽ । एकरा अलावे कुछ भइल सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित 'स्मारिका' पत्रिका-धर्म के बखूबी निबाह क के अपना सामग्री खातिर मील के पत्थर साबित भइल ह । जइसे- अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन, सीवान के अवसर के स्मारिका, अमनौर अधिवेशन के स्मारिका 'इयाद' आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन के बिहार राज्य अधिवेशन, गोपालगंज के स्मारिका आदि ।

थोड़ा में कह सकीले कि भोजपुरी में पत्र-पत्रिका के निकलल संतोषजनक कहाई बाकी सामग्री में स्तरीयता आ कुशल सम्पादन के अभाव एकर अबहूँ ऋणात्मक बिन्दु बा । जइसे-तइसे लिखला से अब जरुरी बा रचना के गुणवत्ता पर धेयान देवे के । ई सम्पादक के अध्ययन, दृष्टि, तटस्थता ओकर सम्पादन-कुशलता का साथ मेहनत पर निर्भर करी ।

●

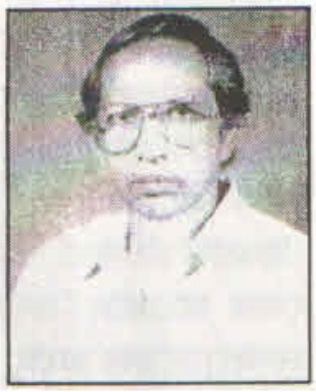

डॉ॰ तैयब हुसैन 'पीड़ित'

जन्म-तिथि	:	16 अप्रैल 1945 ई॰
जन्म-स्थान	:	ग्राम- मिर्जापुर, डॉ॰ रामगढ़ा, वाया- बसन्त, अंचल-गरखा, जिला-सारण (बिहार)
पिता	:	स्व॰ मोहम्मद इसहाक
माता	:	स्व॰ हदीसन
योग्यता	:	एम॰ ए॰ (हिन्दी), पी-एच॰ डी॰ (भिखारी ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व), शिक्षा, पुस्तकालय विज्ञान, नाटक और फिल्म में क्रमशः डिग्री, डिप्लोमा, प्रमाण-पत्र ।
लेखन	:	हिन्दी और भोजपुरी के महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकन में नियमित प्रकाशन । आकाशवाणी आ दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रन से प्रसारण । 'सफेद गुलाब' (सं॰- भूपेन्द्र अबोध), 'इतिहास का अट्टहास' (सं॰- कन्हैया), 'एक पर एक' (सं॰- डॉ॰ डी॰ बी॰ चाँद), 'काव्या' (सं॰- सूर्यदेव पाठक 'पराग'), 'भोजपुरी सतसई' (सं॰- पाण्डेय कपिल), 'समय के राग' (सं॰- जगन्नाथ, भगवती प्रसाद द्विवेदी), 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' (सं॰- जगन्नाथ, नगेन्द्र प्र॰ सिंह), 'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के' (सं॰- सिपाही सिंह श्रीमन्त, कृष्णानंद 'कृष्ण'), 'सेसर कहानी भोजपुरी के' (सं॰- प्रो॰ ब्रजकिशोर), 'समिधा' (सं॰- रिपुञ्जय निशान्त), 'सीवान की कविता' (सं॰- डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय) आदि हिन्दी-भोजपुरी पुस्तकन में सहयोगी रचनाकार । 'बिछऊँतिया' (भोजपुरी कहानी संग्रह) के खुदसर लेखक ।
सम्पादन		'भोजपुरी कहानी सोपान', 'डेग पर डेग' (भोजपुरी काव्य संकलन), 'डुमरी कतेक दूर' (भोजपुरी निबंध संकलन), 'भिखारी

ठाकुर ग्रंथावली' (भाग-1, 2) आदि पुस्तकन में सम्पादन सहयोग।
'समकालीन भोजपुरी साहित्य' (विश्व भोजपुरी साहित्य के मुख पत्र), 'बिगुल' आदि पत्रिकन के सम्पादक-मण्डल में ।
'डेग' (प्रगतिशील भोजपुरी पत्र), 'अद्यतन' (हिन्दी काव्य-केन्द्रित पत्र), 'जिज्ञासा' (विद्यालय आ शिक्षा पर आधारित पत्र) के सम्पादक ।
'अभिव्यक्ति' (हिन्दी पत्रिका, कोटा, राजस्थान), 'विदूषक' (हिन्दी हास्य-व्यंग्य पत्रिका, जमशेदपुर), 'रंगअभियान' (हिन्दी नाट्य पत्रिका, बेगूसराय) आ 'विभोर' (भोजपुरी नाट्य पत्रिका, नई दिल्ली) के परामर्शदाता ।

विशेष : देश आ विश्व स्तर के विभिन्न साहित्य संगठनन में महत्वपूर्ण पद अथवा कार्य समिति के सदस्य ।
कविता आ कहानी के अंग्रेजी, उर्दू आ मलयालम भाषा में अनुवाद प्रकाशित ।
गोरखपुर विश्वविद्यालय, कुँअर सिंह विश्वविद्यालय आ बिहार विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रम में रचना शामिल
भोजपुरी अकादमी, बिहार सरकार, पटना के कार्यसमिति में तिसरका बेर सदस्य मनोनीत ।

पुरस्कार : छात्रे जीवन में 'छात्रबंधु' (पटना) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय विद्यालयीय प्रतियोगिता में 'मेरी पुस्तक' (हिन्दी कविता) प्रथम अइला से पुरस्कृत ।
'भोजपुरी कहानियाँ' (वाराणसी) द्वारा आयोजित अखिल भारतीय भोजपुरी कहानी प्रतियोगिता में 'मांगल मउवत' (कहानी) पुरस्कृत।
'रविभारती' (पटना) द्वारा आयोजित नुक्कड़ नाट्य प्रतियोगिता में 'इनकार' (नाटक) पुरस्कृत ।
'भोजपुरी मंडल' सीवान से कहानी पुस्तक 'बिछऊँतिया' पुरस्कृत।

सम्मान : अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन, पटना से 'रघुवंश नारायण सम्मान' ।
अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्, लखनऊ से 'भोजपुरी शिरोमणि' आ 'भोजपुरी भास्कर' सम्मान ।
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना से 'लोकभाषा साहित्य' सम्मान ।

सम्प्रति : जेड० ए० इस्लामिया कॉलेज, सीवान (जयप्रकाश विश्वविद्यालय) के हिन्दी विभाग में रीडर पद पर कार्यरत ।